मानव मन्दिर

नवम्बर-दिसम्बर, 2019 (वर्ष-46 अंक 11-12)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कल्याण और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक :

परमसन्त परमदयाल पं फ़कीर चन्द जी महाराज

दयाल कमल जी महाराज
09418370397

प्रबन्धक सम्पादक
आचार्य ब्रह्मशंकर जिम्पा
09877490267

प्रकाशक
श्री राणा रणबीर सिंह
09463115977

अनुक्रमणिका

1. आरती- 04
2. मानवता का झंडा - 11
3. हजूर परमदयाल जी महाराज:-
   सौ वर्ष की इबादत से.....-16, सत्संग - 32
   परमसुख-48,परमदयाल जी द्वारा लिखा गया पत्र-66,
   सत्संग-73
3. दानी सज्जनों की सूची - 87

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है।
शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

Faqir Library Charitable Trust (Regd.)
Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur-146001 (Pb) Ph: 01882 243154
web: www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

मूल्य : 20/-

आरती

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
अलख अगम और अनामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया॥
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
बन कर आये परम फकीर, हरने सब जीवों की पीर॥
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
राम भी हो और कृष्ण भी तुम॥
तुम महावीर और बुद्ध गौतम॥
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम॥
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥

परमसंत परमदयाल जी महाराज के जन्मोत्सव

पर

हार्दिक बधाई!

सभी मानवताप्रेमी सत्संगीजनों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि हर साल की भाँति इस वर्ष भी परमसंत परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज का पावन जन्मोत्सव दिनांक 18 नवम्बर, 2019 (सोमवार) को मानवता मन्दिर, होशियारपुर (पंजाब) में दयाल कमल जी महाराज के सान्निध्य में हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। कृपया समय से पूर्व पधार कर एवं उत्सव में आयोजित सत्संग-समागम में सम्मिलित होकर पूज्य परम दयाल जी महाराज के प्रेरणादायक जीवन-प्रसंगों को सुनकर लाभ उठाएँ।

सभी सत्संगीजनों से अनुरोध है कि इस पावन अवसर पर लंगर तथा प्रसाद ग्रहण करके जायें। बाहर से आने वाले सज्जनों के भोजन व ठहरने का प्रबन्ध फ़कीर लाईब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट की ओर से किया जायेगा।

आचार्य ब्रह्मशंकर जिम्पा

मानवता मन्दिर, होशियारपुर

पंजाब (भारत)

राधास्वामी! राधास्वामी!! राधास्वामी!!!

सभी सत्संगी भाई-बहनों को परम संत परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज के जन्मदिन की हार्दिक बधाई।

एक बात मैं आप सभी सत्संगी, भाई-बहनों से काफी समय से साँझी करना चाहता था, आज महाराज जी के जन्मदिन के सुअवसर पर आपसे साँझी कर रहा हूँ।

मुझे मन्दिर में श्री के.एम. परदेसी जी जो कि पच्चीस साल अध्यक्ष पद और जब से मन्दिर बना ट्रस्टी रहे, लेकर आये। 1980-81 में मुझे महाराज जी के दर्शनों का लगभग तीन बार अवसर मिला। 2013 में मैंने मानवता मन्दिर पत्रिका में पंजाब नेशनल बैंक के एकाऊंट का प्रकाशन कर दिया जिस पर परदेसी साहिब मुझसे काफी नाराज़ हुए। उन्होंने कहा चाहे हमारा मकसद कुछ भी हो हमारे यहाँ सत्संगियों से धनराशि माँगने की प्रथा नहीं है। इसके बाद हमारे यहाँ काम करने वाले एक सेवक की बेटी की शादी के लिए मैंने सत्संग के बाद अनुरोध किया जिस पर दयाल कमल जी महाराज ने ऐतराज़ किया। उन्होंने भी यही कहा कि हमारे यहाँ यह प्रथा नहीं है। कुछ दिनों पहले हमारी लाईब्रेरी प्रभारी वन्दना कपूर जी ने महाराज जी का 1976 का सत्संग पढ़ाया जो कि हम इस बार मानवता मन्दिर में प्रकाशित कर रहे हैं—

'' मेरा कर्म

सहायक मन्त्री मानवता मन्दिर ने फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट का हिसाब दिखाया, उसने कहा कि आंखों का हस्पताल खुलने के बाद

मन्दिर के कुल व्यय के लिए कम से कम 135000/- रुपया की धन राशि प्रति वर्ष चाहिए। सुना, रात को अपने अन्तर सोचा की ऐ फ़कीर! तूने यह क्या किया? एक गड्ढ़े से निकला और दूसरे कुएँ में गिरा। मगर अपना जीवन याद आता है। मुझको बचपन से ही किसी वस्तु की तलाश थी। वह तलाश मुझ को दाता दयाल महर्षि शिव व्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उस पवित्र विभूति ने मेरी उस तलाश को मिटाने के लिए मुझ पतित और अज्ञानी जीव को छाती से लगाया। जीवन की प्रत्येक दिशा में मुझे उत्साह, सहारा और शक्ति दी। सत्य वस्तु, सच्चाई और शान्ति का रास्ता बताया। जब मैं पंथ में आया था और मैंने भी यह प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया था कि चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। मुझे नहीं पता कि जो कुछ मैंने अनुभव किया वह ठीक है या गलत। आत्मा सत्य प्रिय है। जो कुछ मैंने गृहस्थी, शिष्य और गुरु होने की स्थिति में अनुभव किया वह मुझ को एक ऐसी अवस्था की ओर ले जा रहा है जहां न मैं, न तू, न गुरु, न चेला, न राम, न रहीम और न करीम। मगर अभी तक उस धुर धाम में मैं ठहर नहीं सकता। मालूम नहीं क्यों? मैं यह कहने में विवश हूँ कि या तो मेरे कर्म या इस संसार की रचना करने वाले की इच्छा।

मेरे इस कर्म भोग वश मैंने इन्सान बनो की आवाज़ उठाई। धर्मों और पंथों में जो रोचक और भयानक बातें धर्म और पंथ चलाने के लिए और दुनिया को पीछे लगाने के लिए कही गई, उनको मैंने साफ कर दिया। समझ में आया की जब तक मनुष्य जीवन है वह आपस में प्रेम, सहायता और सेवा के अधीन है। अध्यात्मिक जीवन भी नाम, ध्यान प्रकाश और

शब्द का अधीन है। इसलिए मैंने मन्दिर में यथा शक्ति अनाथों, अन्धों और गरीब विद्यार्थियों की सहायता करने का काम किया। आर्थिक हीन लोगों के लिए होम्यौपैथिक, दांतों और आंखों का हस्पताल खोला। कई जीव भ्रम और शंका ग्रस्त होते हैं, उन को अपने भविष्य अथवा भाग्य की चिन्ता होती है। इनके लिये ज्योतिष का प्रबन्ध किया। जो सज्जन साधन या अभ्यास करना चाहते हैं उनके लिए भी प्रबन्ध किया। मगर जब डिप्टी सैक्रेटरी ने मन्दिर का हिसाब बताया तो ख्याल आया कि इतना व्यय करना कठिन मालूम होता है। यदि मैं परदा रखता, जिस प्रकार मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनकी सहायता करता है, मरते समय ले जाता है और दवाईयें बताता है, भारत वर्ष में ही नहीं विदेशों में भी, तो जितना भी धन चाहता माँग सकता था। मगर मेरी आत्मा ने नहीं माना।

मानव मन्दिर पत्रिका या अन्य किताबें जो मानवता मन्दिर में छपती हैं मैंने उनका कोई मूल्य नहीं रखा। बिना मूल्य साहित्य बांटने का कारण मेरा ब्राह्मण के घर का जन्म है। ब्राह्मण के लिए वेद बेचना पाप है। क्योंकि किताबों में जो कुछ लिखता हूँ वह मेरा अनुभव है। इसलिए मैंने इसकी कोई कीमत नहीं रखी। रात को सोचा कि माया के चक्कर में तो तू आ गया, अब बता तू क्या करेगा? मेरा निर्णय यह है।

जो सज्जन मेरे साहित्य को पढ़ते हैं यदि उनकी आत्मायें इस बात को मानती हैं कि मेरे इस काम द्वारा मानव जाति का भला हो सकता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करें। मन्दिर में एक पैसे की हेरा-फेरी नहीं होती। ट्रस्ट है और विधिवत हिसाब है। जब तक इस सहायता से काम चलेगा चलाऊँगा। अगर न चला तो हस्पताल बन्द कर दूंगा। दाता का

हुक्म है कि शिक्षा बदल जाना। मानव मन्दिर जारी रहेगा। यदि किसी कारण यह भी न चल सका तो मौज मालिक। दाता दयाल के ऋण से उत्तीर्ण हो जाऊंगा। इसलिये जो लोग मानव मन्दिर पढ़ते हैं उनसे यह मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि पत्रिका का प्रकाशन बढ़ रहा है। जिनकी रुची इसके पढ़ने में न हो वह न मंगवायें।

ऐ मेरी ज़िन्दगी को बनाने वाले ? मेरे हैपने को बनाने वाले। तेरा प्रेम था। मालूम नहीं मैंने जो कुछ किया अथवा समझा ठीक है या ग़लत है। मैं शरणागत हूँ। जिस रास्ते तेरी मौज है उसी रास्ते से मुझे ले चल। अब उस दिन की प्रतीक्षा करता हूं जब अपनी हस्ती को खोकर उसी परम तत्त्व में चला जाऊं।

फकीर''

कृपा सत्संगी इसे पढ़ लें। जिसमें महाराज जी ने फरमाया कि शिवदेव राव एस.एस.के. हाई स्कूल के विद्यार्थियों से कोई फीस न ली जाये। मानवता मन्दिर पत्रिका निशुल्क बाँटी जाये। गरीब, अनाथ बच्चों की आर्थिक सहायता व विवाह में उनकी मदद की जाये। विधवाओं और वृद्धों को मासिक अनुदान दिया जाये। एलोपैथिक व होम्योपैथिक डिस्पैंसरी फ्री चलाई जाए। एक बड़ा स्टाफ फकीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट व मानवता मन्दिर स्कूल के लिए काम कर रहा है जिनके लिए मासिक सेवादारी और मन्दिर के रखरखाव व बिजली, पानी, टेलिफोन, कम्प्यूटर, लंगर, प्रकाशन आदि मदों पर दैनिक व मासिक खर्च आता है। यह सब आप सभी सत्संगियों के सहयोग से ही सम्भव है। अभी-अभी श्री सुधीर भटनागर जी और उनकी पत्नी श्रीमती क्षमा भटनागर जी ने हमें अपने माता-पिता श्री आनन्द भूषण व विमला भूषण की याद में साढ़े चार

लाख रूपये सोलर प्लान्ट और विद्यार्थियों की निशुल्क शिक्षा के लिए भेजे। इससे पहले श्री राहुल भटनागर जी व उनकी पत्नी श्रीमति वन्दना भटनागर जी ने इसी काम के योगदान हेतु साढ़े छः लाख रूपये भेजे थे। मैं ट्रस्ट की तरफ से भटनागर परिवार का अनुग्रही हूँ। मुम्बई के सत्संगियों ने भी एक बड़ी राशि हमें अनुदान में दी।

हमारा ट्रस्ट दयाल कमल जी महाराज के आशीर्वाद और आचार्य पं. ब्रह्मशंकर जिम्पा जी (प्रधान) के दिशा निर्देश और आचार्य कुलदीप शर्मा जी, आचार्य अरविन्द पाराशर जी तथा सभी ट्रस्टियों के सहयोग से दिन-रात आपकी सेवारत है। अगर हमारी सेवा में कोई कमी हो तो फोन द्वारा या ईमेल द्वारा प्रेषित करें।

अंत में एक बार सभी सत्संगी भाई-बहनों से कहना चाहता हूँ मन्दिर की सफाई की जिम्मेवारी हम सभी की है। अगर कोई डेरा या मन्दिर आपको साफ-सुथरा लगता है या आप उसकी तुलना अपने मन्दिर से करते हैं तो वहाँ के सत्संगियों की सेवा भावना आप अपने में भी लायें। अगर मेरी बात कड़वी लगी हो तो हाथ जोड़कर माफी चाहता हूँ। परमदयाल जी के सपनों को साकार करने के लिए सभी सत्संगी भाई-बहनों का सहयोग आपेक्षित है। 18 नवम्बर पर बड़ी संख्या में पहुँचकर हमें गुरु महाराज का जन्मदिन मनाने का अवसर दें तथा अपनी सेवा का मौका दें। आपकी आने की अपेक्षा में—

आपका दास

सचिव

राणा रणवीर सिंह,

मानवता मन्दिर होशियारपुर

मानवता का झंडा

आइये मानवता के झंडे को उठाइये। मनुष्य की आन, बान, शान का निराला झंडा। प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि इस झंडे को ऊँचा रखे। यह झंडा उन सिद्धान्तों का नियमों को जताने वाला है जो इस पुस्तक में दिये गये हैं। इसकी स्तुति करनी चाहिए और मानवता की आवाज़ को ऊँचा करना चाहिए।

मानवता के झंडे, कर जोड़ करें प्रणाम॥
प्राणी मात्र का एक निशान, मानवता की शान गुमान॥
एक मालिक की सब सन्तान, जुग जुग उड़ ऊँचे आसमान॥
तू प्राण है सबका, तन मन आतमराम॥ मानवता०
वह मालिक अत्यन्त महान, पा न सका कोई इसका थान।
तुमको बाँटा टुकड़े आन, मानवता की मानव ले जान॥
अन्धकार के बस में, बन गये धर्म तमाम॥ मानवता०
जब देखा तेरा यह हाल, माँ बसुंधरा हुई बेहाल।
दाया उमड़ी पुरुष दयाल, प्रगटे जग में परम दयाल॥
भूतल गाढ़ा तुमको, मानवता के नाम॥ मानवता०
ऐ मानव तू मानव बन, हिन्दू मुसलमान न बन।
मालिक बसता सबके तन, जन की सेवा करे सो जन॥
निज परिवार की सेवा, भक्ति है निष्काम॥ मानवता०
सच्चचरित्रता के मारग आ, आशावादी ख्याल बना।
सहित विवेक धर्म कमा, फिर मालिक को सकेगा पा॥
जी और जीने दे, तू उड़ता दे पैगाम॥ मानवता०
रंय तीन से शोभावान, ब्रह्म जीव और माया जान।
सत्त चित्त आनन्द की खान, भारतवर्ष का यही निशान॥
नीचे इसके आवें, जीव त्रिलोकी धाम॥ मानवता०
चमकें सूरज तीन कमाल, कबीर साहब नानक कृपाल।
राधास्वामी शिवदयाल, मानवता का दिया ख्याल॥

दिव्य लोक उड़ना तुमको, यह परमदयाल का काम॥ मानवता०
युग युगान्तर उड़ता रह, मानव सेवा करता रह।
राग एकता गाता रह, दया दयाल की पाता रह॥
सुख पावें संसारी दिन दिन, प्रातःकाल व शाम॥ मानवता०
मानवता के सन्त ने आ, इन्सान बनो' आदेश दिया।
जीवन की आधार शिला, रोग सोग की महा दवा॥
सन्देश मेरा पहुँचा दो- देश देशान्तर नगर ग्राम॥ मानवता०
अदुभुत झंडा जग में आया, 'इन्सान बनो' इस नाम धराया,
जग कल्याण का रूप रचाया, इसे सन्त सतगुरु बनाया॥
आओ भाई बहिनो! कर जोड़ करें प्रणाम॥ मानवता०

मनुष्य

Be-man Entire, whole and in everything. अर्थात् हर प्रकार से मनुष्य बनो। **(महर्षि शिवब्रतलाल)**

गुरु पशु नर त्रिया पशु, वेद पशु संसार।
मानसा ताही जानिये, जाहि विवेक विचार॥ (कबीर साहब)

इंसान मसजूदुल मयालक..... मजमुयाउलसिफात..... मजमुआ कमालात है।

मानव बनकर ना जिया, जिया तो डंगर ढोर॥
हिन्दू कहूँ तो मारिये, मुसलमान भी नाहिं।
पाँच तत्त्व का पूतला, नानक धरिया नाम॥(गुरुनानक)
मन अनन्तर में बैठके, मन को ले तू जान।
मन को धोखा देत है, वह नहिं है इंसान॥

यों तो सब खूबियाँ हैं तेरे जहान में।
मेरी निगाह तरसती है, आदमी के लिये॥

अफसोस दुनिया में कोई इंसान न रहा।
कोई हिन्दू और कोई मुसलमान हो गया॥

माल पराया जान कर, हजम कर लिया बेईमान।

जुग जुग बहु कष्ट सहे, कभी न बने इंसान ॥

पीर पराई देखकर, भये अधीर कबीर।

पीर पराई ना लखे, सो काफिर बेपीर ॥

मनुष्य का अपने अपने आप में दोष देखना मनुष्यता के मार्ग में पहिला कदम है।

इंसानियत (मनुष्यता) रूहानियत (अध्यात्म) का दरवाजा है।

जो अपने आपको धोखा नहीं देता, वह सच्चा इंसान है।

जीया दया तू पाल तेरे भले की कहूं।

दुख न देव तू काय, तेरे भले की कहूँ ॥

तीन वचन मन मार, तेरे भले की कहूँ ॥(सत्पुरुष राधास्वामी दयाल)

दाया राख धर्म को पाले, जग से रहे उदासी।

अपना सा जीव सबका जाने, ताहि मिले अविनाशी ॥(कबीर)

यदि मानसिक शान्ति चाहते हो तो भावों को वश में रखने की आदत डालो।

श्री अंसारी की 11वीं सदी की फारसी कविता का अंग्रेजी अनुवाद।

BE A MAN

With a heart full of compassion
Egage not in vain doing.
Make not thy home in the street of lust and desire
If thou wouldst become a pilgrim on the path of love
The first condition is
That thou become as humble as dust and ahses
Remove 'A' frorm MURAD (Desire) and it becomes murd (man)
He who renouceth beconeth a man

मानवता के सुनहरी नियम

1. स्वयं जीओ और दूसरों को जीने दो।
2. सहन शक्ति से काम लो। हर स्थिति में समता रखो।

3. वाणी में मधुरता हो।
4. मन में सहानुभूति हो। दयावान हो।
5. तन, मन और धन से दान करें। अपनी कमाई का कुछ भाग निर्धनों, अनाथों और मुहताजों को बांटते रहें।
6. 25 वर्ष की आयु तक शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन करें।
7. शरीर और मन से ऊपर रहें। मन की भावनाओं के वशीभूत न हों।
8. सत्पुरुषों के सत्संग की इच्छा रखें। सतमार्ग का सतज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहें।
9. बेकार न रहें। अपना कमायें अपना खायें। दूसरों की कमाई पर निर्भर न रहें।
10. दृष्टि दूसरों के गुणों पर रखें, ऐबों वा दोषों पर न डालें।
11. किसी के काम में दखल न दें। किसी की निजी बातों को जानने की कोशिश न करें। दूसरों के भेद की बातों को प्रगट करने से बचें।
12. हंस वृति ग्रहण करें और काग वृत्ति को त्याग दें।
13. विशाल हृदयी हों। पक्षपात से बचें। याद रखो कि पक्षपात आत्मिक रोग है।
14. हर समय विचार करते रहें कि हम दूसरों की भलाई के लिये क्या कर सकते हैं। यह विचार न करें कि दूसरे हमारे साथ क्या व्यवहार करते हैं।
15. निष्काम भावना हो। जो काम करो कर्त्तव्य समझ कर करो।
16. हमेशा आशावादी रहो और विश्वास रखो कि मालिक जो कुछ करता है हमारी भलाई या सुधार के लिये करता है।
17. जीवन की आवश्कतायें कम हों। जीवन सादा हो।
18. अन्त:करण को शुद्ध रखो। अन्तर की आवाज़ को सुने।
19. एकता (इत्तफाक) का साथ दें। नाइत्तफाकी पैदा करने वाली

शक्तियों का विरोध या सामना करते रहो।

20. याद रखो कि किसी धर्म में पैदा होना अच्छा है मगर उसका होकर मर जाना बुरा है।
21. It is Good to be born in Church, But it is curse to die in church.
22. मानव बनकर जीयो और मानव बनकर मरो।
23. छोटों पर दया करो, बराबर वालों से प्रेम और बड़ों का आदर करो। विरोधी विचार वालों से उदासीन रहो।
24. मनुष्य वह है जो पीड़ितों की सहायता करे और अत्याचारी को दंड देने की शक्ति रखता हो।
25. यह ध्यान रखो कि उदार हृदय और प्रसन्नचित्त ही मनुष्यता का लक्षण है। कायरता और मुरझाया हुआ चेहरा शारीरिक और मानसिक निर्बलता है।

मनुष्यता के जो नियम लिखे गये हैं उनका प्रत्येक धर्मावलम्बी पालन करके जीवन को गौरवशाली बना सकता है। संसार का कोई धर्म, समाज, रंग और जाति उनके पालन करने में कोई रुकावट नहीं हो सकती।

आपने किसी धर्म में जन्म लिया है या किसी धर्म को धारण किया है तो आप धन्य हैं क्योंकि किसी भी धर्म का समझ बूझ के साथ मानवता जीवन को सुखी और गौरवशाली बनाना है और मनुष्यता के मार्ग में ठीक पथ-प्रदर्शन करना है।

इन नियमों के पालन करने से मनुष्य वास्तव में मनुष्य बन जाता है। धीरे धीरे जीवन क्रियात्मक हो जाने से मनुष्य को शारीरिक और मानसिक आनन्द और शान्ति मिलती है।

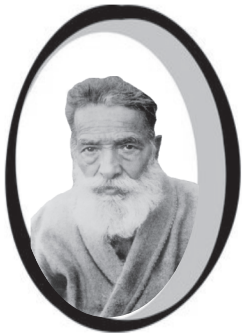

सौ वर्ष की इबादत से अढ़ाई घड़ी का सत्संग उत्तम

परमसन्त परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर (14.1.1976)

माघ महीना अति रस भरा, काया बन मन गुलशन हरा।
चमन चमन फुलवारी खिली, बाग बाग नहरें अब चली।
गुरु भक्ति और पौद प्रेम की, क्यारी धीरज दया नेम की।
अस अस लीला देखी घट में, मन माली सींचे छिन छिन में।
नैनन आगे पंच रंग फूल पल-पल निरखत तिल तिल झूल।
तत्त्व पिर्थवी भिन होय दरसा, ऋतु बसंत फूली मन सरसा।
झलक जोत और उमंड घटा की, रिमझिम बरसे बूंद अमी की।
सहस धार दल सहस कंवल में, उठें तरंगे फैलें मन में।
मन चढ़ चला महल अपने में, उलटा पहुंचा गगन मंडल में।
गगन मंडल लीला इक न्यारी, शब्द गुरु की खिल रही क्यारी।
मूल नाम और शाखा धुन की, फूली जहं फुलवार त्रिगुन की।
यह लीला घट माहिं निहारी, महिमा नाम कहा कहुं भारी।

राधास्वामी! ऐ धार्मिक और पन्थिक संसार के अनुयायियों! छोटी आयु से मेरे अन्तर एक तलाश थी। मेरी 'मैं' कुछ चाहती थी। जो कुछ मैं चाहता था उसको राम, कृष्ण और भगवान मानता था और उसके दर्शन की इच्छा थी। 24 घंटे लगातार रोने के बाद मेरा एक दृश्य मुझे हजूर

दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गया। उन्होंने मुझे सन्तमत की शिक्षा दी। अब जो आदमी इस वाणी को पढ़ेगा उसके अन्तर यह जज्बा पैदा होगा कि जो कुछ इसमें लिखा हुआ है उसको देखूँ। मेरे अन्तर यह जज्बा था कि मैं उसे देखूँ। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। इसलिए जो कुछ मेरी समझ में आया वह कहता रहता हूं मगर मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा है वही ठीक है। लेकिन मुझे इस अनुभव से शान्ति मिली है। यह जो बारह मासा है मेरी समझ में यह बात आई है कि इस बारह मासा में जो कुछ लिखा है यह हमारे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक जीवन के बोध भानों से परे की अवस्था है। हाढ़ महीना में वह लिखते हैं।

प्रथम असाढ़ मास जग छाया,

आसा धर जीव गर्भ समाया।

वह लिखते हैं कि जीव गर्भ में कैसे आया? हम वासना रूप से गर्भ में आये हैं। यह माघ महीने का शब्द है जो ऊपर लिखा गया है। मैं अपने आपसे कहता हूँ कि फकीर! यदि झूठी हाँ में हाँ मिलाओगे तो कुष्टी होके भरोगे।

माघ महीना अति रस भरा,

काया बन मन गुलशन हरा।

अब आदमी साधन करता है तो उसको क्या मिलता है? खुशी आनन्द और मस्ती। हजूर महाराज ने प्रेम बाणी में लिखा है कि अभ्यास के समय यदि तुमको खुशी मिलती है, कभी रोशनी दिखाई पड़ती है, कभी गुरु स्वरूप के दर्शन होते हैं और चिन्ता नहीं व्यापती तो समझो कि तुम्हारा

अभ्यास ठीक है। चिन्ता रहित, शोकरहित होने, खुशी और आनन्द को प्राप्त करने के लिए हम अभ्यास करते हैं। उन्होंने इस खुशी को अलंकार रूप में वर्णन किया है। यदि अभ्यास में तुमको खुशी आनन्द और उत्साह नहीं मिलता तो तुम्हारा अभ्यास गलत है। इस अभ्यास से कोई लाभ नहीं। हमारा जो Self है वह खुशी और आनन्द चाहता है। जो सांसारिक वस्तुओं से आनन्द प्राप्त करते हैं वे भूले हुए है। क्यों? आज धन है तो कल को हो सकता है कि न रहे आज संतान है कल को शायद न रहे। तो यह खुशी समाप्त हो जाएगी। इसलिए यह मार्ग किन के लिए है?

विषयो से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आसा।

धन संतान प्रीत नहीं जाके, जगत पदार्थ चाह न ताके।

तन इन्द्री आसक्त न होई, नींद भूख आलस जिन खोई।

विरह बाण जिन हृदय लागा, खोजत फिरे साध गुरु जागा।

जिसको अकारण वैराग्य नहीं है उसको इस नाम से कोई लाभ नहीं होगा। ऐसे आदमी इस वाणी की बातों का अनुभव नहीं कर सकते क्योंकि उनका मन संसार की नाशवान वस्तुओं में फंसा हुआ होता है। इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। किसको नाम दूं? संसार तो संसार के चक्कर में है। ऐसे आदमियों के लिए नाम कैसा? उनके लिए है सत्संग। यह संसार तो काया और माया का संसार है। आज दुख है तो कल को सुख है, आज धनी है तो कल गरीब है। इसलिए सन्तों ने लोगों को यह शिक्षा दी और यह शिक्षा है भी ठीक। नाम चाहे किसी से भी लिया हुआ हो और चाहे किसी नाम से भी तुम मालिक को याद करते हो मैं इस बात की परवाह नहीं करता। मैं यह चाहता हूँ कि तुमको खुशी मिले।

चमन चमन फुलवाड़ी खिली,

बाग़ बाग़ नहरें अब चली।

इस बाणी को पढ़कर लोग अन्तर में फुलवाड़ियाँ, बाग़ बगीचे और नहरें नदी आदि देखने का यत्न करते हैं मगर यह तो अलंकार है। जैसे रेडियो पर कभी-कभी यह सुना करते हैं कि मैं चाँद का टिक्का लगाऊँगी, तारों के बुन्दे पहनूंगी और सूर्य की चादर ओढ़कर अपने यार को मनाने जाऊंगी। यह रोचक शिक्षा है यथार्थ नहीं है। अन्तर में न बाग है, न फूल हैं, न नदियाँ हैं और न नहरें हैं। अन्तर में जो बाग फूल या नदी आदि तुमको दिखाई देते हैं ये केवल Suggestions & Impressions हैं। केवल संस्कार हैं जो तुमने पढ़े हैं या सुने हैं। इसके सिवा और कुछ नहीं है मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा और दूसरे हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। गलत है या ठीक है यह मुझे पता नहीं मगर मेरी नीयत बिलकुल साफ है। मैंने स्वयं अपने आप में बड़े-बड़े दृश्य, चमत्कार नदी समुंदर और रोशनियां देखीं मगर अनुभव यह सिद्ध करता है कि अन्तर में न पेड़ हैं, न फूल हैं, न दरिया हैं और न नहरें हैं। तुम स्वयं सोचो कि इस छोटे से सिर में नहरें हैं। तुम स्वयं सोचो कि इस छोटे से सिर में नहरें कैसे चल सकती हैं और पहाड़ कैसे आ सकते हैं। यह केवल संस्कार हैं। तुम स्वप्न में कई कुछ देखते हो, क्या वे सचमुच सब कुछ होता है ? नहीं ? ये सब संस्कार हैं और माया है।

गुरु भक्ती और पौद प्रेम की।

क्यारी धीरज दया नेम की।

गुरु भक्ति से संसार मिलता है और विचार मिलता है मगर मिलता तब है यदि हमने विश्वास किया हो और प्रेम किया हो। प्रेम और भक्ति के

बिना तुमको किसी की बात का विश्वास नहीं आयेगा। जिससे तुम प्रेम करते हो वह जो कुछ भी कहेगा तुम उसको सत मानोगे और जब सच मानोगे तो जो कुछ उसने कहा है वही तुम्हारे अन्तर आयेगा और वही तुम्हारे अन्तर फुरेगा।

अस लीला देखी घट में,

मन माली सींचे छिन छिन में।

वह फरमाते हैं कि अन्तर में जो लीला तुमको दिखाई देती है वह सब तुम्हारे मन माली के कारण और मैं भी यही कहता हूं कि अन्तर में जो देवी देवता गुरू या जो कुछ भी तुम देखते हो ये केवल संस्कार हैं। इन सबको बनाने वाला तुम्हारा मन है। इन में असलियत कुछ भी नहीं है। अन्तर में न पेड़ हैं, न फव्वारे हैं। इस बाणी को सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई कि जो कुछ मेरा अनुभव है वही स्वामी जी महाराज ने कहा है इसलिए मेरा अनुभव ठीक है।

नैनन आगे पंचरंग फूल,

पल पल निरखत तिल तिल झूल।

पंचरंगी फुलवाड़ी क्या है ? हमारे शरीर में पांच तत्त्व काम करते हैं। हर एक का रंग जुदा है। मिट्टी का रंग पीला है पानी का रंग नीला है, वायु का भी रंग है, आकाश का भी रंग है। अन्तर में जब हम इकट्ठे होते हैं तो अन्तर में हमको यह पांचों तत्त्वों के रंग या रंग बिरंगे दृश्य दिखाई देते हैं। यह है पंचरंग फूल।

तत्त्व पिर्थवी भिन होय दरसा,

ऋतु बसंत फूली मन सरसा।

बंसत की ऋतु में खुशी मिलती है। तात्पर्य यह है कि हम अपने

अन्तर में इन दृश्यों को देखकर खुश होते हैं। मैं भी होता था और तुम भी होते हो। शरीर में पांच स्थूल तत्त्व हैं। मन में पांच सूक्ष्म तत्त्व हैं इनके कारण ही अन्तर में नाना प्रकार के रंग रूप दिखाई देते हैं और यह सारा मन का खेल है बाहर में भी यह रंग हैं और अन्तर में भी है।

झलक जोत और उमंड घटा की,

रिमझिम बरसे बून्द अमी की।

अमी है अमृत। हमारे जीवन के होने का जो बोध है या हमारा हैपना है उसका नाम अमृत है। अन्तर में इसको देखकर हमको मस्ती मिलती है आनन्द और खुशी मिलती है।

सहस धार दल सहस कंवल में,

उठें तरगें फैले मन में।

ये सहस दल कंवल के दृश्य हैं और अभ्यासी सारा जीवन इसी में मस्त रहते हैं। सहस दल कंवल है हजारों पत्तियों वाला फूल। यह फूल हमारा मन है। इस मन में से अनेक प्रकार के भाव और विचार निकलते हैं। अन्तर में जो दृश्य दिखाई देते हैं, हिन्दु को राम दिखाई देता है कृष्ण दिखाई देता है किसी को कोई देवी या देवता दिखाई देता है, किसी को गुरु स्वरूप दिखाई देता है। ये सब सहसदल कंवल के दृश्य हैं और आदमी इन दृश्यों में आनन्द लेता है। बाहर में भी पाँच तत्त्व के दृश्य हैं और अन्तर में भी पाँच सूक्ष्म तत्त्वों के हम दृश्य देखते हैं। इन दृश्यों के कारण हम बाहर में भी और अन्तर में भी दुख और सुख उठाते हैं। कोई सुन्दर वस्तु देख ली तो प्रसन्न हो गये और वह नाश होगी तो दुखी हो गए। गुरु स्वरूप के अन्तर में दर्शन हो गये तो खुश हो गये और न हुए तो उदास हो गये।

मन चढ़ चला महल अपने में,

उल्टा पहुंचा गगन मंडल में।

इन दृश्यों को देखते हुए मन अपने मंडल की ओर चला। मन का घर कौन सा है? जब तक मन त्रिकुटि के दृश्य देखता है तो वह अपने घर में नहीं है। वह बाहर मुखी है। जब मन इस अवस्था को छोड़ जाता है तो फिर वह अकेला हो जाता है और हजारों प्रकार की वृत्तियों को छोड़ जाता है।

गगन मंडल लीला इक न्यारी,

शब्द गुरु की खिल रही क्यारी।

त्रिकुटि के स्थान की आवाज़ को हिन्दुओं ने बम-बम कह दिया या ओम् ओम् कह दिया और मुसलमानों ने उसे अल्लाहू कह दिया और सिखों ने इसे वाहेगुरु कह दिया। आवाज़ की असलियत को तो वर्णन नहीं किया जा सकता है, जैसे घंटा की आवाज़ को टन टन कह कर प्रगट किया जाता है।

मूल नाम और शाखा धुन की,

फूली जहं फुलवार त्रिगुन की।

कौन समझेगा इस बाणी को इन बाणियों को पढ़कर संसार पागल हो गया। न घर के रहे न बार के रहे। वहां सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण की फुलवाड़ी खिलती है। यह गुण क्या हैं? तमोगुण स्थूल बोध भान हैं। मन के बोध मानों का नाम रजोगुण है जो कि सूक्ष्म है और कारण बोध मानों का नाम सतोगुण है। वहां मन अपने अन्तर त्रिगुणात्मिक जगत के प्रभाव रखता है और उनका अनुभव करता है।

यह करनी का भेद है नाहीं बुद्ध विचार।

कथनी तज करनी करे तब पावे कुछ सार।

जब आदमी यहाँ पहुंच जाता है तो भी वह काल चक्कर से नहीं निकलता। ओम् की धुन सुनने वाला त्रिगुणात्मिक जगत में है। वह जन्म मरण से रहित नहीं हो सकता।

यह लीला घट माहिं निहारी,

महिमा नाम कहा कहुं भारी।

यहाँ पहुंच जाने से नाम की महिमा का पता लगता है और आदमी को खुशी और आनन्द मिलता है।

सरगुण नाम और सरगुण रूपा,

वहां तक देखा मन का सूता।

वहां सरगुण नाम है अर्थात् देह वाला है। जिस वस्तु को तुम अपने अन्तर देह धारी देखते हो वह सरगुण है। गुरु स्वरूप राम, कृष्ण, देवी देवता, पेड़ तालाब जो कुछ भी तुम अपने अन्तर देखते हो। यह सब सरगुण है और यह सब पृथ्वी तत्त्व का खेल है।

अब आगे सूरत चढ़ चाली,

पैठी जाय सुखमना नाली।

इंगला, पिंगला और सुषुम्ना तीन नाड़ियाँ हैं। जिनके अन्तर परोपकार, नेकी, दुखियों की सेवा और शुभ विचार होते हैं उनकी सुरत इंगला नाड़ी में जाती है। जिनके विचार गंदे होते हैं उनकी सुरत पिंगला नाड़ी अर्थात् बाईं ओर जाती है। इस वास्ते सन्तमत में बाईं ओर की आवाज़ सुनने की आज्ञा नहीं है। जब रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण की दिशा को छोड़ दोगे, संसार की ओर से निपट जाओगे और मालिक को मिलने की कामना होगी तब सुषुम्ना नाड़ी में जाओगे। सांसारिक इच्छायें रखने वाला सुषुम्ना नाड़ी में नहीं जा सकता। शरीर के अन्तर भिन्न-भिन्न

नाड़ियाँ हैं, कोई बलग़म की नाड़ी है, कोई मूत्र की नाली है, कोई टट्टी की नाली है। **इसलिए जब तक सत्संग करके पहले यह समझ नहीं आयेगी कि बुराईयों को कैसे छोड़ना है तब तक नाम का अधिकारी नहीं बन सकते। इसलिए मैं नाम नहीं देता केवल सत्संग कराता हूँ।** सुषुम्ना नाड़ी में सुरत तब जायेगी जब मन का बन्धन इस संसार से नहीं रहेगा। जब तक नेकी और बदी दोनों से तुम्हारे चित्त की वृत्ति जुदा नहीं होगी तक तक तुम्हारी सुरत आगे नहीं जायेगी। दाईं ओर नेकी के विचार और बाईं ओर बदी के विचार हैं इसलिए गृहस्थियों को जो आगे नहीं जा सकते, परोपकार और दान आदि की आज्ञा है।

सुखमन में निज मन दरसाना, निज मन आगे निरगुन जाना।

यह निरगुन वह सरगुन देखा, दोनों घाट भिन्न कर पेखा।

यहाँ तक सारे का सारा खेल सरगुण का था अर्थात् रूप बनते थे। इससे आगे निर्गुण है। वह फरमाते हैं कि मैंने अपने अन्तर सरगुण और निरगुण दोनों का तमाशा देखा। दोनों एक बराबर हैं।

अब आगे पांजी इक गाऊं,

गंधर्व नाल के मध्य चढ़ाऊं।

राग गाने वाले को गंधर्व कहते हैं। जब रंग रूप छोड़ कर सुरत आगे चली जाती है तो वहां शब्द को सुनने से उसे आनन्द और सुख मिलता है।

नाल भुवंगन बायें त्यागी,

दहने नाल धुन्धरी जागी।

भुवंगन नाम है सांपनी का उन्होंने बाईं ओर के विचारों को सांपनी कहा है। इसका भाव यह है कि बुराईयों को छोड़कर सुरत आगे चली गई।

जगत नाल काल मुख मूंदा,

घाट अठासी नाका रूंधा।

जब सुरत 88 घाट अर्थात् अनेक प्रकार की वृत्तियों को छोड़कर आगे शब्द में चली गई तो काल का मुंह बन्द कर दिया। काल है हमारा मन। हमार मन जो भान्ति-भान्ति के संकल्प करता है वह अब संकल्प नहीं करता। मन सुन्न और महासुन्न में आ गया या यूं समझो कि निर्विकल्प समाधि लग गई।

सिंह पौल ढिंग झंझरी निरखी,

सेत पदमनी जाली परखी।

सेत का अर्थ है सफेद। आगे जाकर सफेद रंग का प्रकाश होता है और उसमें बाजा बजता है। इस जगह आकर मन चक्कर समाप्त हो जाता है।

सुन्न ताल जहं धुन भंडारा, छजली कजली दीप निहारा।

सागर नागर जा कर झांका, कुरम शेष अक्षर जहां थाका।

यह केवल शब्दों का जाल है। जब सुरत यहाँ पहुंच जाती है तो प्रकाश देखने और शब्द को सुनने से आनन्द मिलता है। वहां न मन है और न ही कोई गुण है। वहां आत्मा का अपना ही रूप होता है।

जहाँ सुंरगी दीप झरोखा,

सुरत अड़ी जाय द्वारा रोका।

यहाँ आकर मन समाप्त हो जाता है। यह भंवरगुफा है। यहां आकर आदमी अपने रूप में ठहरने का यत्न करता है।

संदली चंदली चौकी डारी,

सुरत मंडली पाट खुलारी।

संदल क्योंकि ठण्डा होता है और सुगन्ध वाला होता है उससे शान्ति मिलती है ऐसे ही सुरत जब अपने मंडल में चली जाती है तो उसको वहां शान्ति मिलती है। शारीरिक बोध भान और हैं, मानसिक और हैं, आत्मिक और हैं और सुरत के बोध भान और हैं। यह करनी का विषय है।

कुंडली दीप छबीली रमना,

दामिन दीप सोत का झरना।

वहां खुशी और आनन्द मिलता है। यही बात हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज ने कही थी कि सतलोक में आनन्द ही आनन्द है। इसके सिवा उन्होंने सतलोक की कोई और अधिक व्याख्या नहीं की। हिन्दु शास्त्र ब्रह्मसूत्र में लिखा है कि अन्नमय कोष में यह होता है, प्राणमय कोष में यह होता है मनोमय कोष में यह होता है और आगे चलकर लिखते हैं कि विज्ञान मय कोष का सिर खुशी है, कन्धे संतोष हैं पेट आनन्द है और ब्रह्म उसकी दुम है। ये जितनी योग की मंजिलें हैं यह हमारे जीवन और हस्ती के बोध भानों का वर्णन है। उनको वर्णन करने के लिए ऋषियों और सन्तों ने अपने-अपने शब्द प्रयोग किये हैं। लेकिन बात एक ही है केवल वर्णन शैली भिन्न-भिन्न है।

जिस अवस्था का यह वर्णन है यह विज्ञान मय कोष है। सोत का झरना क्या है? जो मैंने समझा है वह कहता हूँ। हमारी आत्मा जब निर्विकल्प समाधि से आगे भंवरगुफा में जाती है तो उसके अन्तर से जो खुशी और आनन्द के बोध भान की धार निकलती है वह है झरना। जिस प्रकार बिजली चमकती है ऐसे ही वहां रौशनी होती है। ये सब आकाश तत्त्व के गुण हैं। सहसदल कंवल में सूक्ष्म तत्त्व जो पृथ्वी के हैं उनका

अनुभव होता है, सुन्न महासुन्न में वायु के सूक्ष्म तत्त्वों के अनुभव होते हैं। क्योंकि वायु का कोई रूप नहीं है इसलिए सुन्न में कोई रंगरूप नहीं होता। भँवरगुफा में सूक्ष्म अग्नि तत्त्व के अनुभव होते हैं। इस समझ से कम से कम मेरी आत्मा को शान्ति मिलती है। इससे परे वह अवस्था है जहाँ से यह सूक्ष्म और कारण तत्त्व बनते हैं। वह है सतलोक। उसका नाश नहीं है मगर इससे नीचे सबका नाश है। जिस प्रकार बाहर में इन तत्त्वों का नाश है अर्थात् पृथ्वी पानी में मिल हो जाती है, पानी वायु में मिल जाता है, वायु अग्नि में मिल जाती है और अग्नि आकाश में मिल जाती है, ऐसे ही अन्तर में साधन करने वाले के सूक्ष्म पाँचों तत्त्वों की समाधि के समय प्रलय हो जाती है। इसके बाद बाकी जो चीज़े रह जाती है वह है सत।

नीलम कुंड खन नल पाल, महाकाल रचिया जहाँ जाल।

यह भंवरगुफा है। सोहंगपुरुष है। 'मैं हूँ'। इसमें से सारा संसार बना है। यदि मन में यह मैं न होती या अहंभाव न होता तो तुम्हारे वास्ते यह सारा-संसार समाप्त हो जाता। इस स्थान पर जगत का अर्थात् महाकाल का नाश हो जाता है। यही मैंने कहा है कि जब सुरत इस जगह पहुंचती है तो निचले जितने भान हैं जोकि काल और माया है। ये सब समाप्त हो जाते हैं।

कंकन घाटी सुरत सुमाई,

जाल काल सब दूर पड़ाई।

सन्त इससे आगे गये अपने मैंपने अर्थात अहंकार को छोड़ गये। अहंकार क्या है ? यह मेरा बाप है, यह मेरा बेटा है, यह मेरी सम्पत्ति है यह मेरा धर्म है, यह मेरा कर्म है आदि-आदि। ये सब अहंकार है। जहाँ भी मेरा तेरा पना है, यह सब काल की रचना है। आगे न मैं है न तू है। हस्ती अपने

आपमें जाकर ठहर जाती है। जिस जगह से मैं निकलती है वह भंवरगुफा का स्थान है।

सेत धरन जहाँ लाल अकासा,

हंस छावनी देख विलासा।

वहाँ सेत अर्थात् सफेद रंग है और मामूली लाली झलकती है। वहां हंस रहते हैं। ऐ स्वामी जी ! आपकी वाणी तो ठीक है। जो कुछ आपने कहा, वह है तो ठीक, मगर वाणी इस ढंग से लिखी गई है कि इसको पढ़कर संसार पागल हो गया। असल भाव को कोई समझ न सका। मैंने स्वयं इन दर्जों को देखने के लिए बारह-बारह घंटे अभ्यास किया। वहां हंस क्या है ? मैंने जो समझा है वह कहने का अधिकारी हूँ। जिस प्रकार हमारे रक्त में सफेद और लाल कीड़े होते हैं और यदि ये कीड़े न हों तो रक्त पानी हो जायेगा और जीवन नहीं रहेगा। ऐसे ही उस मंडल की जो हस्ती है उसमें हस्ती के अणु होते हैं। जब तुम वहाँ पहुँचते हो तो तुम भी वहाँ अणु होते हो। वहाँ जो पहले हैं वे भी अणु हैं। वे हंस हैं। हंस आपस में मिलते हैं और खुशी लेते है मगर ज़बान नहीं होती। हंस न खाते हैं न पीते हैं, न बोलते हैं और न सोते हैं। हंसपना क्या है ? जीवन की हस्ती का एक भाग है। हमारे अन्तर में वह हमारी सुरत है। सूर्य के अन्तर सूर्य की किरणों का जोड़ है, वही किरणें बाहर निकलती हैं। ऐसे ही उस लोक से जो किरणें निकलती हैं वे सुरतें हैं। जब वे वापस जाती हैं तो अपने जैसी किरणों से मेल खाती हैं। यह मेरी समझ में आया है। यदि कोई और हंस हैं तो मुझे पता नहीं। मैं चाहता हूँ कि वर्तमान महात्मा और गुरु सच्चे बनकर प्लेट फार्म पर यह सच्चाई वर्णन करें कि उन्होंने अन्तर में क्या देखा।

हंस एक जानवर है जो दूध और पानी को जुदा कर देता है। ऐसे

ही हमारी सुरत जब वहाँ पहुंचती है, तो काल माया से सार तत्त्व को जुदा करके उस सार तत्त्व को ग्रहण कर लेती है जिस प्रकार हमारे रक्त में यदि लाल और सफेद कीटाणु नहीं हैं तो वह रक्त नहीं रहता पानी बन जाता है, जिससे हमारा जीवन समाप्त हो जाता है। ऐसे ही सतलोक में यदि अणु नहीं हैं तो वह सतलोक नहीं रहेगा। मैं ऐसा समझता हूँ।

यह पांजी निरखी निज धामी,

विमल दीप बैठे जहाँ स्वामी।

वह जो अवस्था है किसी ने उसको पांजी कह दिया, किसी ने लोक कह दिया और किसी ने तबक कह दिया, किसी ने उसको आसमान कह दिया और किसी ने सतलोक कह दिया। वहाँ जाने से सुरत को अपने घर का पता लगता है। हम सब सतलोक से आये हैं। यही गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने कहा है।

मैं हूँ सतगुरु का दासा,

देखन आया जगत तमाशा।

हमारा असली रूप क्या है? प्रकाश और शब्द और वही शब्द है राधास्वामी कोई इसको सत सत कहता है, कोई हक हक कहता है। वह हमारे अपने ही रूप का शब्द है। वह शब्द अटूट है। वह घटता बढ़ता नहीं है वह शब्द एक रस है। उसमें एक ही लय होती है।

ऐ महात्माओं! आप लोगों ने जीवों को सच्चाई नहीं बताई और उनको भ्रम में डालकर गलत ढंग से अपने पीछे लगाया है। इन वाणियों को पढ़कर लोग सारी आयु तुम्हारे पांव चाटते रहे। क्या मिला उनको?

पोहप नगर जहाँ अमृत धाम,

हंस बसें पावें विश्राम।

यह सारा खेल जीवन के बोध भानों का है। ये अवस्थायें हैं। पोहप है फूल। जिस प्रकार फूल में से सुगन्ध आती है वैसे ही वहाँ सुगन्ध आती है। मेरे साथ बीता हुई है मैं सुनाम स्टेशन पर था और अभ्यास किया करता था एक बार मेरा सिर इतना ठंडा हो गया जैसे सिर पर बर्फ रखी हुई हो। बर्फ की ठंडक तो चुभती है लेकिन वह बहुत आनन्ददायक थी। तीन दिन तक यह दशा रही। कुछ दिन बाद हजूर दाता दयाल जी महाराज आये और मैंने उनको सारा हाल बताया कि मेरे सिर की तीन दिन तक यह दशा रही। उन्होंने फरमाया कि फकीर! मेरे अनुभव में यह बात नहीं आई। आप सोचो कि वह कितने सच्चे आदमी थे। मैं यह समझता हूँ कि इस अवस्था में जो आदमी ज्यादा समय तक अभ्यास करता है वह शीघ्र मर जायेगा। मुझे भी उस अवस्था का अनुभव है जहां अभ्यासी के अन्तर से सुगन्ध आती है। वह सुगन्ध क्या है और क्यों आती है? मैं अपना अनुभव बताता हूँ। तुम गुलाब की पत्तियों को पानी में डाल दो, कुछ दिनों के बाद पत्तियाँ गल जायेंगी लेकिन उस पानी में से सुगन्ध आयेगी। हमारे मस्तिष्क के दो भाग हैं। एक सफेद और लाल। अभ्यास करते-करते जब हमारी सुरत सफेद रंग के मस्तिष्क के भाग से ऊपर चली जाती है तो एनर्जी के न होने के कारण सफेद रंग की प्रकृति के भाग गलने और सड़ने लग जाते हैं। जान निकल जाने के बाद जब शरीर सड़ जाता है तो क्योंकि शरीर भारी वस्तु है इसलिए इसमें से बदबू आती है और मस्तिष्क का सफेद भाग क्योंकि हलकी से हलकी प्रकृति से बना हुआ है इसलिए जब उसके सूक्ष्म भाग सड़ने लगते हैं तो उनमें से सुगन्ध आती है।

सरदार सन्तसिंह के साथ भी ऐसा हुआ था। उसके अन्तर से सुगन्ध आती थी। उसने मुझे लिखा। मैंने उसे तार दी कि अभ्यास बन्द करो

और तुरन्त मेरे पास आओ। वह आया तो मैंने उसे असलियत समझाई कि अभ्यास मत करो अन्यथा मर जाओगे।

बैठक स्वामी अद्भुती, राधा निरखनहार।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार।
गुप्त रूप जहाँ धरिया, राधास्वामी नाम।
बिना मेहर नहिं पावई, जहाँ कोई विश्राम।

वह स्वामी है सार शब्द। जिसमें से हमारी सुरत बनी है। रचना में पहले गति होती है और फिर शब्द पैदा होता है। शब्द को सुनने की जो चेतनशक्ति है वह है सुरत। पहले सुरत नहीं थी। वह ज़ात में गुम थी। जब गति हुई तो शब्द पैदा हुआ और सुरत बन गई। फिर उसको अपने होने का बोध हुआ। जिसके भाग्य में है वह इस ओर आता है और यत्न करता है। जिसके भाग्य में नहीं है वह यत्न भी नहीं करता। यह कर्म की बात है और मेरा भी यह कर्म भोग है।

गुप्त रूप है ज़ात। जब हमारी यह दशा आ जाती है तो अंश कुल में लीन हो जाता है। तुम लोग आये हो अभ्यासी हो, इसलिए मैंने यह सत्संग कराया है। भ्रम में न आना और वाणी जाल में मत फंसना।

वाणी जालम महा जालम।

वाणियाँ भी सच्ची हैं। संसार को आकर्षण करने के लिए ये रोचक वाणियाँ बताई गई हैं।

सबको राधास्वामी!

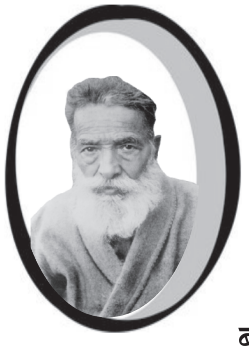

सत्संग

परमसन्त परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर (9.12.1979)

बँधे तुम गाढ़े बंधन आन।
पहिले बंधन पड़ा देह का, दूसरा तिरिया जान।
तीसर बंधन पुत्र विचारो, चौथा नाती मान।
नाती के कहिं नाती होवे, फिर कहो कौन ठिकान।
धन संपति और हाट हवेली, यह बन्धन क्या करूँ बखान।
चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी, बाँध लिया अब बहु विधि तान।
कैसे छूटन होय तुम्हारा, गहरे खूँटे गड़े निदान।
मरे बिना तुम छूटो नाहीं, जीते जी तुम सुनो न कान।
जगत लाज और कुल मरजादा, यह बंधन सब ऊपर ठान।
लीक पुरानी कभी न छोड़ो, जो छोड़ो तो जग का हान।
क्या क्या कहूँ विपत मैं तुम्हरी, भटको जोनि भूत समान।
तुम तो जगत सत्य कर पकड़ा, क्यों कर पाओ नाम निशान।
बेड़ी तोड़ हथकड़ी बाँधे, काल कोठरी कष्ट समान।
काल दुष्ट तुम बहु विधि बाँधा, तुम खुश होके रहो गलतान।
ऐसे मूरख दुख सुख जाना, क्या कहूँ अजब सुजान।
शरम करो कुछ लज्जा ठानो, नहिं जमपुर का भोगो डान।
राधास्वामी सरन गहो अब, तो कुछ पाओ उनसे दान।

राधास्वामी! रात को बहुत से सत्संगी, जो बाहर से आये हुये हैं, वे मेरे मकान पर गये। उनके हालात सुने और फिर अपने-आपसे पूछा— 'फकीर, तुमने यह मकड़ी का जाला क्यों ताना?, क्या तू किसी की सहायता कर सकता है?' अपना जीवन याद आता है। मैं क्यों यह काम करता हूँ? हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे कहा था कि तू फ़कीर बन। फ़कीर तो मैं बन गया उनकी दया से और आप सत्संगियों की दया से। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम लिखा है—

देह के बन्ध फ़कीर जो आवे, बन्ध निर्बन्ध न सोई।
बन्ध कर बँधुए जीव छुड़ावे, समझे यह मति कोई।

मैं हूँ समय का सत्गुरु। सत्संग कराता हूँ और किताबें लिखता हूँ। क्यों? मैं स्वयं बन्धन में रहा हूँ। मेरा बन्धन क्या है? इस संसार में आया। होश आई। पिता जी का स्वभाव बहुत सख्त था, ज़रा सी बात पर पीटना शुरू कर देते थे। घर में गरीबी थी। कुछ बड़ा हुआ तो शादी हो गई। स्त्री साढ़े-सात साल हस्पताल में बीमार रही और मर गई। इसलिए मैं दुखी रहता था और मालिक की तलाश करता था। इस बन्धन को तोड़ने के लिए राम को मिलने का बन्धन लिया कि यदि राम मिल जायेगा तो ये सारे दुख दूर हो जायेंगे और बन्धन कट जायेंगे। यह विचार मुझे रामायण और भागवत से मिला था। एक बन्धन टूटा तो रामायण और भागवत का बन्धन आ गया। फिर सुमिरन, ध्यान, प्रकाश और शब्द के चक्कर में आ गया। कुबेरनाथ! आँखें खोल। अब मुझे पता लग गया कि बन्धन क्या थे। **अपने आपको अर्थात् अपनी सुरत को किसी वस्तु के साथ जोड़ने की इच्छा का नाम बन्धन है।** हम जानते हैं कि

हमें मर जाना है, लेकिन फिर भी हमको शरीर के साथ मोह है और हम चाहते हैं कि हम न मरें। पहले शरीर का बन्धन, फिर सगे सम्बन्धियों का बन्धन। यह यदि छूट भी जाये तो फिर धर्म-कर्म और पंथ का बन्धन। अब आप लोगों से पता लगा कि मैं तो कुछ और ही चीज़ हूँ और मुफ्त में ही यहाँ फँसा हुआ हूँ।

जब सत्संगियों ने मुझे बताया कि मेरा रूप उनके अन्दर प्रकट होता है और उनकी सहायता करता है; तो मुझे असलियत पता लगी— क्योंकि मैं तो उनके अन्दर होता नहीं हूँ। इसीलिए मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्दर भी जो कुछ प्रकट होता है यह भी सब संस्कार है और माया है। मुझे समझ आ गई कि मैं भी हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के साथ अपने ही एक विचार से बँधा हुआ था। जब यह बन्धन कट गया कि कौन किसी का बाप, कौन किसी की माँ, कौन किसी की स्त्री और कौन किसी का बेटा, तो फिर इस ममता में आ गया कि मेरा धन, मेरी दौलत, मेरा गुरु और मेरा चेला। अब इस बन्धन से भी निकल गया और अब मैं ऊँचा जाता हूँ, प्रकाश को देखता हूँ और शब्द को सुनता हूँ। ***फिर मैं उस चीज़ की तलाश करता हूँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह वस्तु बन्धन में आई हुई है। वह चीज़ क्या है? सुनो! प्रकाश और है, शब्द और है और वह चीज़ और है; प्रकाश और शब्द से भिन्न है।*** जब मुझे यह विश्वास हो गया कि मेरे या तुम लोगों के अन्दर जो रंग-रूप प्रकट होते हैं, यह सब माया है, संस्कार हैं और केवल कल्पना है; तो मैंने एक फर्ज़ी बन्धन लगाया कि मैं समय का सन्त सत्गुरु हूँ। मैं सत्संग कराता हूँ और किताबें लिखता हूं। क्यों?

जब फ़कीर देह में आता है तो वह आप तो निर्बन्ध होता है, मगर वह अपने आपको बँधुआ बनाकर दूसरे जीव जो बन्धन में होते हैं उनको छुड़ाता है। फ़कीर वह वस्तु है जो मेरे अन्तर में प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। जो मैं हूँ वही तुम हो। लेकिन पहले मैं बन्धन में था और अब बन्धन से निकल गया। अब मैं यह यत्न करता रहता हूँ कि अपने आपको निर्बन्ध अवस्था में रखूँ। संसार के बन्धन तो मेरे टूट गये और मन के बन्धन भी टूट गये, मगर प्रकाश और शब्द का बन्धन अभी तक नहीं टूटा, लेकिन कुछ ढीला अवश्य पड़ गया है। यह कब टूटेगा, मुझे पता नहीं। जब यह भी टूट जायेगा तो फिर क्या होगा—

माला फेरूँ न हरि भजूँ, मुख से कहूँ न राम।
मेरा राम मुझको भजे, तब पाऊँ विसराम।

या वह अवस्था आ जायेगी जिसके बारे स्वामी महाराज ने **सार वचन नज़्म** में लिखा है।

नहीं खालिक़ मख़लूक़ न ख़िल्क़त,
कर्ता कारन काज न दिक्कत।
द्रष्टा दृष्ट नहीं कुछ दरसत, बाद लक्ष नहीं पद न पदारथ।
ज़ात सिफ़ात न अव्वल आखिर,
गुप्त न परगट बातिन ज़ाहिर।
राम रहीम करीम न केशो, कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो।
सिम्रित शास्त्र न गीता भागवत, कथा पुराण न वक्ता कीरत।
सेवक सेव न दास न स्वामी, नहिं सतनाम न नाम अनामी।

लेकिन अभी तक मुझमें पूरी तरह से यह अवस्था आई नहीं

है। मैंने यह खेल इसलिए रचाया है कि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे ज़िम्मे यह कर्त्तव्य लगाया हुआ है। उन्होंने फरमाया था—

तू तो आया नर देही में धर फ़कीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी।

तुम लोग मेरे पास आते हो। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग अपने रूप को समझ कर निर्बन्ध बनने का यत्न करो। मगर तुम लोग छूटना नहीं चाहते और इस बन्धन को कायम रखना चाहते हैं। लेकिन यह बन्धन तो ज़रूर कटेगा। आज नहीं तो कल और कल नहीं तो दो दिन बाद। अब वैसाखी आ रही है। मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि तुम्हें क्या लेना इस काम से? गुरु की आज्ञा और मेरे कर्म! मैं आया ही फ़कीर बनने के लिए हूँ। पहले मुझसे फ़कीर बना नहीं जाता था। तभी तो हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया था और आप सत्संगियों ने मुझे निर्बन्ध कर दिया। इसलिये मैं आप लोगों को अपना सच्चा सत्गुरु मानता हूँ। मैंने मानवता मंदिर बनाया। सत्संग कराता हूँ और किताबें लिखता हूँ। क्यों ताकि तुम लोग भी बन्धन से निकल जाओ।

नाती के कहिं नाती होवे, फिर कहो कौन ठिकान।
धन संपति और हाट हवेली,
यह बन्धन क्या करूँ बखान।

किसी का कोई झगड़ा है और किसी का कोई। किसी का बेटा

नालायक है और किसी को स्त्री से शिकायत है। ये सब अपने माने हुये बन्धन हैं। इन बन्धनों से आज़ाद होने के लिए वेदान्त के दृष्टिकोण से **योगवासिष्ठ** है। संसार में ज्ञान का भंडार केवल दो किताबें हैं— एक गीता और दूसरी योगवासिष्ठ। लेकिन हम लोग केवल पढ़ना ही जानते हैं, गुनना नहीं जानते। गुरु-भक्ति क्या है? गुरु के वचनों को सुनना, गुनना और उन पर अमल करना।

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन-सुन कर फिर मन में गुने।
गुन-गुन काढ़ लेवे तिस सार, काढ़ सार तिस करे आहार।
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गँवाई।

यह है असली गुरुभक्ति। भोले भाले लोगो! यदि धन देने से, रोटी खिलाने से या कपड़े देने से पार उतारा हो जाता, तो सभी पैसे वाले निर्बन्ध हो जाते। लेना- देना तो संसार का व्यवहार है। धन दोगे, धन मिलेगा, प्रेम दोगे प्रेम मिलेगा, घृणा दोगे वही मिलेगी। मगर जो कुछ मैं देना चाहता हूँ वह तो कोई लेता नहीं है। मैं तो तुम लोगों को निर्बन्ध करना चाहता हूँ। मगर जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर अमल तो कोई करता नहीं; केवल मेरी ही प्रशंसा करते रहते हैं। अमल करने से तुमको लाभ पहुँचेगा; लेकिन यहाँ आकर मैं फेल हो गया कि अमल करने और गुनने की शक्ति व्यक्ति में है भी या नहीं। फिर सोचता हूँ कि—

जिस पर दया आद कर्ता की सो यह नेमत पावे।

जिसके भाग्य में होता है वही इस ओर आता है। अरे दिवाने पूर्णचन्द! जो कर्म तुमने किये हुए हैं वे अवश्य भोगने पड़ेगे।

चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी, बाँध लिया अब बहु विधि तान।

यदि स्वामी जी महाराज आज होते तो उनसे प्रार्थना करता कि आपका इससे क्या भाव है? मैं यह समझता हूँ कि शरीर, मन, प्रकाश और चौथा पद, जिसमें रहकर हम प्रकाश को देखते हैं और शब्द को सुनते हैं— यह चार लड़ हैं। ये चारों भी बन्धन का कारण हैं। हमारी सुरत इनमें फँसी रहती है। यदि तुम शब्द में बन्धे हुए न होते, तो जब तुम्हारा शब्द नहीं खुलता, तो रोते क्यों हो? मैं यह समझता हूँ कि पाँच लड़ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं और सात लड़ अभ्यास के दर्जे - सहस्र-दल-कँवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा और सतलोक हैं। हम इन सबसे न्यारे हैं, मगर हम इनके बन्धन में हैं। **हम न शरीर हैं, न मन हैं, न प्रकाश हैं और न शब्द हैं।** हम क्या हैं?

अकह अपार अगाध अनामी।

वह हमारी ज़ात (सत्ता) है। हम उसमें आकर यहाँ चक्कर में आ गये। गुरु आता है और सत्संग कराकर जीव को समझाता है कि इससे निकलो। कैसे निकलोगे? सुरत को इस ओर से हटाओ। मगर जब तक शरीर है, यदि कोई यह चाहे कि वह इस बन्धन से निकल जाये तो यह असम्भव है; चाहे वह सन्त हो, परमसन्त हो। इस बन्धन के रूप को समझकर उसमें न फँसना ही बन्धन से आज़ाद होना है। यह मेरी समझ में आया है। कोई सन्त भी जगत से बाहर नहीं निकला और न ही जब तक शरीर है निकल सकता है। वे खेल खेलते थे मगर बन्धन में नहीं आते थे। मैं भी ऐसा ही करता हूँ। तुम लोगों के साथ हँसता हूँ और खेलता हूँ, मगर बन्धन में नहीं आता। मगर जिन बन्धनों में पहले आ चुका हूँ वे बन्धन अब तक भी मुझे नहीं छोड़ते। मुझे अभी तक भी

रेलगाड़ी, माँ-बाप और स्त्री स्वप्न में आ जाते हैं। कभी तो मुझे याद रहता है कि यह स्वप्न है और कभी याद नहीं रहता। इसलिए क्या पता कि मेरा क्या परिणाम होगा?

यदि हमको घाटा पड़ गया, लड़का मर गया या कोई और हानिकारक बात हो गई तो हम दुखी होते हैं और यदि कोई अच्छी बात हो गयी तो हम सुखी होते हैं। हम सब इन्हीं बन्धनों में बँधे हुये हैं। जिस को अपने रूप का ज्ञान हो जाता है, वह निर्बन्ध हो जाता है। तुम सभी फ़कीर हो। तुम्हारे अन्दर वह वस्तु, जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है, वह है फ़कीर और वही तुम हो। देह में आये और बँध गये और अब रोते हो। इससे छूटने का क्या उपाय है?

कैसे छूटन होय तुम्हारा, गहरे खूँटे गड़े निदान।
मरे बिना तुम छूटो नाहीं, जीते जी तुम सुनो न कान।

स्वामी जी कहते हैं कि लोग सुनते नहीं हैं। अब तुम सोचो कि कहाँ मेरा मार्ग और कहाँ तुम्हारी ये सांसारिक बातें? मगर मेरा यह कर्त्तव्य है। इसलिए मैं यह काम करता हूँ और चाहता हूँ कि जैसे मैं निर्बन्ध हुआ, वैसे ही तुम भी निर्बन्ध हो जाओ। मगर यहाँ आकर मैं फेल हो गया। स्वामी जी के समय में कितने आदमी निर्बन्ध हुए यह मुझे पता नहीं। मगर यह मैंने पढ़ा है कि स्वामी जी ने ३५० आदमियों को नाम दिया और उनमें से भी बहुत से आदमी नाम लेकर उनको छोड़ गये। वह आदमी को पहले टैस्ट किया करते थे। कबीर साहिब ने धर्मदास को तीस साल के बाद नाम दिया था। धर्मदास हर एक साल के

बाद कबीर साहिब के पास आते और वे कहते कि अभी तुम नाम के योग्य नहीं बने। धर्मदास ब्राह्मण था और लकड़ियों को पानी से धोकर जलाया करता था। जब धर्मदास को नाम दिया तो उसके बाद एक दिन जब वह लकड़ियाँ जला रहा था तो उनमें बहुत सी चींटियाँ जल गईं और धर्मदास दुखी हुआ। कबीर साहिब का रूप प्रकट हुआ और धर्मदास से कहा कि क्या तुम कृष्ण जी के उपासक हो? उसने कहा कि हाँ। कबीर साहब के रूप ने कहा— कृष्ण जी ने तो महाभारत में अठारह अक्षौहिणी लोग मरवा दिये और उनको कोई पाप नहीं लगा, तो तुम इन चींटियों के जल जाने से क्यों रो रहे हो? जब कृष्ण जी को कोई पाप नहीं तो तुमको क्या पाप है।

जगत लाज और कुल मरज़ादा, यह बन्धन सब ऊपर ठान।
लीक पुरानी कभी न छोड़ो, जो छोड़ो तो जग की हान।

हम लोग लोक-लाज के मारे पुराने रीति रिवाज़ को नहीं छोड़ते। किसी धर्म में शमिल होने के बाद हम जानते भी हैं कि यहाँ कुछ नहीं है मगर हम बन्धन में आ जाते हैं। उदाहरण के रूप में मेरे पास दो आनन्दमार्गी आये। मैंने उनसे पूछा कि तुम्हारे गुरु महाराज के विरूद्ध क्या कुछ हुआ? वे कहने लगे कि नहीं महाराज! उनके विरूद्ध तो कोई ऐसी बात नहीं है। वे तो बहुत पढ़े, लिखे आदमी हैं मगर जेल जाने के डर से छुपे हुए हैं। मैंने बताया है कि सुमिरन- ध्यान भी बन्धन है, मगर एक बन्धन को तोड़ने के लिए दूसरा बन्धन लेना पड़ता है। सुमिरन-ध्यान का बन्धन और दूसरे बन्धनों को तोड़ने के लिए गुरु का बन्धन है और फिर गुरु का बन्धन भी छोड़ना पड़ता है। सनातन धर्म कहता है कि पहले बुराई को छोड़ो और अच्छाई को पकड़ो। नेक बनो। जब नेक बन

जाओ तो फिर नेकी को भी छोड़ दो। एक काँटे को निकालने के लिए दूसरा काँटा प्रयोग करो और जिस काँटे से दूसरे काँटे को निकाला है फिर उस काँटे को भी फैंक दो। क्योंकि यह सम्भव है कि यह काँटा तुमको फिर किसी समय चुभ जाये। हम लोग धर्मों के टेकी हैं। यदि रामायण का एक पृष्ठ किसी ने फाड़ दिया तो सिर फट गये या किसी के गुरु को किसी ने बुरा भला कह दिया तो झगड़ा खड़ा हो गया। इसलिए मैं कहा करता हूँ कि यदि तुम्हारे सामने किसी ने मेरे बारे में बुरी बात कही या मुझे गाली दी और तुमको क्रोध न आये तब मैं समझूँगा कि तुमने मेरी शिक्षा को प्राप्त किया है और मेरे मरने पर यदि कोई रोयेगा तो समझो कि उसने मेरी शिक्षा को प्राप्त नहीं किया। हम एक बन्धन को छोड़कर दूसरा बन्धन ले लेते हैं और उसमें फँस जाते हैं। बन्धन के बिना तो निर्वाह नहीं मगर बन्धन के रूप को समझो।

पहले गुरु की भक्ति कर पीछे और उपाय।
बिन गुरुभक्ति मोह जाल कभी न काटा जाय।
मोटे बन्धन जगत के गुरुभक्ति से काट।
झीने बन्धन मन के कटें नाम परताप।

कैसे? तुम्हारे अन्तर रूप आता है या प्रेम आता है या तुम मानवता मंदिर के साथ बँधे हुये, हो तो इस बन्धन से निकलने के लिए नाम है। नाम में बन्धन नहीं है। सुरत अपने आप में ठहर कर नाम को सुनती है। वहाँ कोई बन्धन नहीं है।

सहजे ही धुन होत है हरदम घट के माहीं।
सुरत शब्द मैला भया मुख को हाजत नाहीं।

जो कुछ मैंने कहा है उसका प्रमाण हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के शब्द में है। मैं पथभ्रष्ट नहीं हूँ, मैं बिल्कुल सच्चाई वर्णन कर रहा हूँ। पहले बुराइयों को छोड़ो, फिर इस मार्ग में आओ और फिर यदि तुम्हारे भाग्य में होगा तो बन्धन को तोड़ोगे।

ममता जाती नहीं मेरे मन से।
मेरा कोई न मैं हूँ किसी का, मुझमें कुछ नहीं मेरा।
समझ बूझ ऐसी काम न आई, करता हूँ मेरा तेरा।
मिटे न यह लाख यत्न से।

ममता भी तो बन्धन है। ममता क्या है? मेरा गुरु, मेरा धर्म, मेरा कर्म, मेरा इष्ट, मेरा पंथ, मेरा ईश्वर, मेरा परमात्मा— यह सब मेरा-तेरा है और बन्धन है। यह हमारी सम्पत्ति नहीं है।

साथ न लाया अपने कुछ भी, साथ नहीं कुछ जावे।
बीच की दशा में साथ हुआ है, समझ में बात यह आवे।
मनन श्रवण से कथन से।
मेरे तेरे पने का बन्धन, मिथ्या बन्ध बँधाया।
यह बन्धन नहिं काटे कटता, कितना उपाय कराया।
योग युक्ति साधन से।

क्यों? क्योंकि योग, युक्ति और साधन— ये स्वयं बन्धन हैं।

क्या ले आया क्या ले जायेगा, यह जाने सब कोई।
जान-जान अनजान बना है, अचरज अचरज होई।
छूटा नहीं कोई इस बन्धन से।

तन मन धन साधन में ममता, योग ज्ञान में ममता।
राधास्वामी अब तो दया करो तुम, चित में आवे समता।
जाये ममता जीवन से।

रात को मेरे मकान पर कुछ सत्संगी आये। मैं अपनी जिम्मेदारी को समझता हूँ। मैंने पाखण्ड का जाल नहीं बनाया। मैंने अपने नाम, अपने मान और अपने धन के लिए कुछ नहीं किया। मैंने जो कुछ किया है, यह मेरा कर्त्तव्य है। हमारे साथ जो कुछ होता है यह हमारे कर्म का फल है और कर्म हमारी वासना है। इसलिए अपनी वासना को ठीक रखो और अपने विचार को ठीक रखो। जब तक शरीर है, बन्धन तो रहेगा, मगर अच्छे विचार को रखकर अपने कर्म को बदलो। मैं क्या करता हूँ? लोगों को अच्छा विचार ही तो देता हूँ। जिनका विश्वास होता है उनके काम हो जाते हैं। ***सदा यह विश्वास रखो कि प्रकृति के हर एक काम में अच्छाई है। यदि दुख आता है तो उसको भी अच्छा ही समझो, इससे दुख कम हो जायेगा। सब तुम्हारे ही विचार का नक्शा है।*** जगवन्ती! मालिक ने जो कुछ किया है यह तेरी अच्छाई के लिए होगा। मगर तुम्हारा संकल्प शेख चिल्ली वाला हिसाब है। सब कुछ हमारी अच्छाई के लिए होता है। जब हमारे बच्चे हमारा कहना नहीं मानते तो हम उनको मारते हैं या दण्ड देते हैं। ऐसे ही जब हम ग़लत रास्ता अपनाते हैं तो हमारा मालिक भी हमको दण्ड देता है। यदि तुम्हें अपने बच्चों को दण्ड देने का अधिकार है, तो तुम्हारे मालिक को भी तुम्हें दण्ड देने का अधिकार है। लेकिन तुम अपने बच्चों को दण्ड क्यों देते हो? उनकी अच्छाई के लिए। ऐसे ही तुम्हारा मालिक भी तुम्हारी अच्छाई के लिए सब कुछ करता है। जो आदमी संसार में ज़्यादा फँसा

हुआ होता है तो वह मालिक उसके साथ ऐसी घटना करता है कि उसका मोह टूट जाये। इसके बारे में एक उदाहरण सुनो। नारद मुनि कहीं जा रहा था। रास्ते में उसको एक और साथी मिल गया। एक सेठ के पास रात रहे। सेठ ने उनको सोने के बर्तनों में खाना खिलाया। प्रात: को जब चलने लगे तो नारद के साथी ने वे बर्तन चुरा लिए। नारद को क्रोध आया मगर उसने साथी से कुछ कहा नहीं! आगे चल दिये। सायं हो गई और आँधी और वर्षा आ गई। रात व्यतीत करने के लिए कोई स्थान चाहिए था। एक झोंपड़ी दिखाई दी। वहाँ गये तो उत्तर मिला कि यहाँ कोई स्थान नहीं है। उन्होंने बहुत प्रार्थना की तो उनको रात व्यतीत करने की आज्ञा मिल गई और रात को खाने के लिए उनको चने दिये। प्रात: जब चलने लगे तो सोने चाँदी के बर्तन उनको दे दिये। नारद बहुत चकित हुआ। आगे गये तो एक अन्य सेठ के पास पहुँचे। उस सेठ के कोई लड़का नहीं था और वह सन्तों की सेवा किया करता था। फिर लड़का हो गया तो वह लड़के के मोह में फँस गया। जब वह नारद और उसके साथी के साथ या सन्तों के साथ बात करता था तो उसका ध्यान अपने लड़के में होता था। प्रात: को जब सेठ के पास से चले तो नारद के साथी ने सेठ के लड़के को मार दिया। आगे चल कर नारद ने पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया। विष्णु जी महाराज प्रकट हो गये और कहने लगे— जिसके सोने के बर्तन चुराये थे वे इसलिए चुराये थे ताकि इस घटना से उसको ज्ञान हो जाये और वह भक्ति की ओर आ जाये। उस झौंपड़ी वाले को सोने के बर्तन इसलिए दिये ताकि उसको यह समझ आ जाये कि सन्तों की सेवा करने से यह फल मिला है और वह सेवा में लग जाये। सेठ के बच्चे को इसलिए मारा था कि वह मोह से निकल जाये

और अपने जीवन को अच्छा बनाये। इसलिए मालिक जो करता है वह अच्छा करता है। यदि दुख आता है तो भी अच्छाई के लिए आता है। मैं अपने बारे बताता हूँ कि मेरा एक लड़का मर गया और मैं खुश हुआ। मेरी स्त्री सत्संगियों से कहती थी कि मेरा तो लड़का मर गया और तुम्हारे गुरु को जोबन चढ़ गया। मैं क्योंकि गरीब था और सोचता था कि इसको कैसे पढ़ाऊंगा। इसलिए मैं खुश हुआ। मेरी एक विवाहित लड़की मर गई। मैंने शुक्र किया। क्यों? दामाद सदा तंग करता था कि यह नहीं दिया और वह नहीं दिया। एक कुंवारी लड़की मर गई। मैंने दाता का धन्यवाद किया। उसकी शिक्षा और विवाह के लिए कहाँ से धन लाता? इसलिए मालिक जो करता है अच्छा करता है। तुम्हारा ही विश्वास काम करता है। मीरा बाई को विश्वास था कि ठाकुरों का प्रसाद अमृत होता है। उसको विष दिया गया। उसके विश्वास के कारण विष भी उस पर कोई बुरा प्रभाव न कर सका। यहि हम यह सोचेंगे कि मालिक जो करता है, अच्छा करता है, तो उसका परिणाम हमारे लिए अच्छा ही होगा। As you sow, so shall you reap- जैसी करनी वैसी भरनी, जैसा ख्याल वैसा हाल।

मैंने यह सत्संग आपको नहीं कराया; मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया है। मैंने फर्ज़ी तौर पर अपने आपको बाँधा कि मैं समय का सन्त-सत्गुरु हूँ। अब मैं न गुरु हूँ, न चेला हूँ, न सेवक हूँ और न स्वामी हूँ। तो अब मैं क्या हूँ? मेरा एक मालिक है और मैंने उसको हजूर दाता दयाल जी महाराज के रूप में माना। यह मेरी अवस्था है-

भरोसा तेरा है तेरी आस मन में,
लगा रहता हूँ तेरे सुमिरन भजन में।

यही है जतन और यही काम मेरा,
जपा करता हूँ रात-दिन नाम तेरा।
तेरी मौज में रह के निसदिन सुखी हूँ,
नहीं भय न चिन्ता न जग से दुखी हूँ।
खुली आँख से तेरा दर्शन जो पाया,
मिटे सहज में मान मद मोह माया।
न जोगी न साधू न ज्ञानी बना मैं, न भोगी असाधू न मानी बना मैं।
जो था पहले अब भी वही रूप मेरा,
न व्यापा मुझे काल का हेरा फेरा।

तो फिर मेरा रूप क्या है? मैं वह हूँ जो प्रकाश को देखता है और शब्द को सुनता है। तो फिर मैं कौन हूं?

अकह अपार अगाध अनामी

हम सब का वही रूप है। हम बन्धन में आ गये। गुरु आता है, चेतावनी देता है, ज्ञान देता है और भेद बता देता है।

न जागा न सोया न सुषुप्ति में आया,
न आसा निरासा के भय ने सताया।
न दौड़ा न बैठा न लेटा कभी मैं ,
न माता पिता और न बेटा कभी मैं।
नहीं ब्रह्म माया का है द्वन्द्व मुझको,
न उलझा सका कर्म का फन्द मुझको।
सहज रूप है और सहज कर्म बानी,

सहज में सहज की सहज हूँ निशानी।

सहसदल अनेक और त्रिकुटी की त्रिपुटि,

दशा द्वैत की सुन्न में भी न प्रगटी।

वह वस्तु न माँ है और न बाप है। वह अपना ही रूप है। मुझे अपना रूप तुम लोगों से पता लगा। इस लिए मैं आप लोगों का मान करता हूँ।

महासुन्न अद्वैत का भाव छूटा,

भँवर में नहीं काल माया ने लूटा।

अलख हूँ अगम हूँ अनामी बना हूँ,

कहूँ कैसे कैसा कहाँ और क्या हूँ।

गुरु राधास्वामी ने आकर चिताया,

मेरा रूप मुझको सहज में लखाया।

मुझे जब अपने रूप का ज्ञान नहीं रहता तो मैं इस अवस्था से गिर जाता हूँ और फँस जाता हूँ लेकिन जल्दी सम्भल जाता हूँ। तो गुरु कौन है? गुरु ज्ञान-स्वरूप है और अनुभव-स्वरूप है। लोगों को पता नहीं इसलिए सारा जीवन राम का, कृष्ण का, बाबा फ़कीर का या किसी और गुरु का ध्यान करते-करते मर गये और मंज़िल तक न पहुँच पाये। मेरा सत्संग बहुत ऊँचा है, मगर यह मेरे वश की बात नहीं है। मेरा पहला समय समाप्त हो गया। जो जिस अवस्था में होता है वह वहाँ की बात करता है।

सबको राधास्वामी

परमसुख
ज्ञान का रूप हो जाने में।

परमसन्त परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर (14.3.1976)

राधास्वामी

ऐ मेरे बनाने वाले और संसार को पैदा करने वाले! बचपन से तेरी तलाश थी। इस तलाश के सिलसिले में मौज हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गयी। उस पवित्र विभूति ने मुझे छाती से लगाया। उन्होंने मेरे अवगुण नहीं देखे। मैं उस मालिक को ढूँढता हुआ आ रहा हूँ। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया था। मैं सोचता हूँ कि इसको कैसे पूरा करूँ। उन्होंने मुझे कहा था कि तू फकीर था। ऐ संसार वालो! मैं सत्य प्रिय व्यक्ति हूँ। मैं नाक कटों में शामिल नहीं हुआ। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे तीन कार्य बताये थे।

1) निबल अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करना।

2) जीवों को भवसागर से पार करना।

3) जगत कल्याण का कार्य कराना।

पहला प्रश्न तो मैं अपने आप से करता हूँ कि क्यों फकीर! क्या तू भवसागर से पार हो गया? क्या तेरा कल्याण हो गया? क्या तेरी निबलता, अबलता और अज्ञानता मिट गई? मैं अपना क्रियात्मिक पक्ष

वर्णन करता हूँ। सुनो! इन सब से परे मैं एक ऐसी अवस्था में चला जाता हूँ। जहाँ न मैं है न तू है, न गुरु है और न चेला है, न राम है न रहीम है न शरीर है न मन है। मगर है सही कुछ। मेरी पिछली आयु आ रही है। अब मैं उसी अवस्था की ओर जा रहा हूँ। ये मेरा कर्म भोग है और हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा है। अब मैं सोचता हूँ कि मैं किसी का कल्याण कैसे कर सकता हूँ। तुम लोग मेरे पास आते हो। बाहिर जाता हूँ तो भी बहुत से लोग मुझे घेरे रहते हैं। मैं अपने आप को उस अवस्था में रखना चाहता हूं जो एक संत या फकीर की होनी चाहिए। वो अवस्था क्या है ?

निज चित सोधें मन परबोधें जीव दोष नहीं दृष्टि।
अपने भाव में बरतें निसदिन, करें दया की वृष्टि॥

ये फकीर के जीवन का परिणाम है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम एक शब्द में लिखा था।

तू फकीर है मेरे प्यारे सुन फकीर की बानी।
साधू कहे फकीर को भाई साधु जग सुख दानी॥
पर उपकारी जन हितकारी, गुरु के आज्ञाकारी।
अवगुण त्यागो, गुन के ग्राही, दया भाव चित्त धारी।
निज चित्त सोधें मन परबोधें जीव दोष नहिं दृष्टि।
अपने भाव में बरतें निस दिन, करें दया की वृष्टि।

मैंने फकीर बनने के लिए सारी आयु खो दी मगर फकीर मुझे तुम लोगों ने बनाया। जबसे मुझे आप लोगों से यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर जगह-जगह और देश विदेश में प्रकट होता है,

उनके काम कर जाता है और मैं नहीं होता तो मैं सोचने के लिए विवश हो गया कि मेरे अन्तर में भी जितने रूप रंग विचार भाव और शक्लें पैदा होती हैं ये असल में है नहीं, ये Suggestionsऔर Impression हैं जो पढ़कर, सुनकर, देखकर और छूकर या प्रारबद्ध कर्म के अनुसार मेरे मस्तिष्क पर पड़े हुये हैं। यह उनकी छाया है। मैं मालिक को मिलने निकला था। अब जब मैं साधन करता हूं तो उन सब चीज़ों को छोड़ जाता हूँ। आगे हैं प्रकाश और शब्द। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा और फिर हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। इसलिए मैं अपने कर्म भोगवश घसीटा जा रहा हूँ। प्रकृति मुझे किसी ओर घसीट कर ले जा रही है। जो लोग मालिक को मिलना चाहते हैं, उनके लिए मेरा क्या संदेश है ? जो धर्मदास कहता है वही मेरा अनुभव है-

कैसे मैं आरती करूं तुम्हारी, महा मलिन प्रभु देह हमारी।
छूती से उपजे संसारा, मैं छूतिया गुन गाऊं तुम्हारा।

जो मेरा अनुभव है वही धर्मदास का था। क्या अनुभव निकला ? कि हमारा मन और हमारा जीवन बाहिर के संस्कारों से बनता है। सारा संसार रेडिएशन से बनता है। हरेक चीज़ की रेडिएशन दूसरी चीज़ों पर पड़ती है और हम पर भी पड़ती है। जब तक कोई आदमी इस रेडिएशन खिंचाव और संस्कारों से परे नहीं जायेगा वो मालिक को नहीं मिल सकता। क्योंकि सूर्य का खिंचाव पृथ्वी का खिंचाव और चांद सितारों का खिंचाव हमारे शरीर और मन पर असर डालता है, और दूसरे हमारी एक दूसरे की रेडिऐशन और संस्कार एक दूसरे पर पड़ते हैं।

इसलिए धर्मदास ठीक कहता है कि हमारी देह मलिन है। विभिन्न प्रकार के संस्कारों के कारण कोई आदमी मालिक को कुछ समझता है कोई कुछ लेकिन वो तो मालिक नहीं है। जब मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और मैं नहीं होता यदि लोग इसे मालिक का रूप समझते हैं तो वे भ्रम में है। इसलिए जब तक कोई आदमी अपने मन से या अपने विचार से मालिक को याद करता रहेगा वो मालिक को नहीं मिल सकता। जो रूप किसी के अन्तर प्रकट होता है वो मालिक नहीं है वो उसके संस्कारों, श्रद्धा प्रेम और विश्वास का परिणाम है–

झरना झरे दशों दिश द्वारे,

कैसे मैं जाऊं साहिब निकट तुम्हारे।

दस द्वारे क्या हैं ? पांच कर्म इन्द्रियाँ और पांच ज्ञान इन्द्रियाँ जब तक किसी की सुरत इन दस इन्द्रियों में है वह दस द्वारों में है इसी का नाम झरना है। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज फरमाया करते थे कि दस द्वारों से आगे जाओ तब आगे सद्गुरु मिलेगा। जब तक कोई आदमी दसवें द्वार से आगे नहीं जायेगा या महासुन्न से आगे नहीं जायेगा वह मालिक को नहीं पा सकता। न ही अपने आद घर की ओर जा सकता है। पुरुषोत्तमदास! बसरे बगदाद में तुम मुझसे कहा करते थे कि कुछ बताओ। अब बता रहा हूँ कि जो आदमी मालिक को मिलना चाहता है। जब तक वह रेडिएशन के चक्र से परे नहीं जायेगा अर्थात् पांच कर्म इन्द्रियों और पांच ज्ञान इन्द्रियों से परे नहीं जायेगा वह मालिक को नहीं पा सकता। यही सनातन धर्म कहता है और यही राधास्वामी मत कहता है–

जो प्रभु देवो अग्र की देही,

तब हम होवें साहिब नाम सनेही।

धर्मदास ठीक कहता है। वह प्रार्थना करता है कि ऐ प्रभु! यदि आप मुझे अग्र की देही दे दो तब मैं मिल सकता हूँ। जब तक कोई आदमी प्रकाशमय या नूर रूप नहीं हो जाता वो न ही आगे जा सकता है और न मालिक को मिल सकता। अग्र की देह का क्या अर्थ है ? हमारे अन्तर नाना प्रकार की रोशनियां हैं। अग्र की देह है केवल निर्मल और सफेद रंग की रोशनी। क्योंकि अग्र की रोशनी सूक्ष्म पवित्र और बिल्कुल साफ होती है। सहस्रदल कमल में पीले रंग की रोशनी होती है। त्रिकुटी में लाल और सुन्न में चांद की रोशनी जैसी सफेद रोशनी होती है। उसमें कुछ नीलापन होता है। लेकिन वह दो असल प्रकाश है वह केवल सफेद और निर्मल होता है। रोशनी रोशनी में अन्तर होता है। प्रकाश का साधन सब धर्मों में है हिन्दुओं में गायत्री मन्त्र और प्राणायाम् है। ये भी सावित्री अर्थात् प्रकाश का साधन है। इसलिए हिन्दुओं में बचपन से ही गायत्री मंत्र का साधन बताया जाता था कि तुम प्रकाश को पकड़ो। इसलिए यदि कोई मालिक को मिलना चाहता है तो उसको पहले प्रकाश मय होना चाहिए। इससे पहले यदि किसी को कोई देवी देवता, गुरु स्वरूप या कोई और दृष्य या कोई और रोशनी नज़र आती है, तो वह रूप उसके अपने बनाये हुए हैं और ये रोशनी भी प्राकृतिक है।

ये भेद मैं इसलिए खोल रहा हूँ कि इस समय देश में अनेक प्रकार के धर्म पंथ और गद्दियाँ हैं। इन गद्दियों और पंथों के कारण और अज्ञान के कारण मानव जाति आपिस में बंट गई और एक दूसरे से अपने

आपको जुदा समझते हैं और आपस में द्वेष भाव रखते हैं। हर एक गद्दी वाला अपने आपको सच्चा और दूसरों को झूठा या गलत समझता है। मेरे जिम्मे हजूर दाता दयाल जी मराराज ने ड्यूटी लगा रखी है।

तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही।

मैंने जगत कल्याण के विचार से इस भेद को खोला है ताकि समझदार लोग मालिक के नाम पर आपस में लड़ाई झगड़े न करें। और मानव जाति में एकता हो जाये, एकता पैदा हो। मालिक एक है। मालिक कहां है? प्रकाश अर्थात् ब्रह्म से परे वहां तक जाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? वही करना चाहिए जो धर्मदास कहता है। कोई राधास्वामी नाम को नाम समझता है, कोई पांच नाम को नाम समझता है, कोई राम नाम को, कोई अल्लाह को और कोई वाहेगुरु को नाम समझता है। ये सब भूले हुये हैं। नाम इस समय मिलता है जब आदमी अपने आपको पहले प्रकाशमय बनाये, सफेद रंग के प्रकाश में जाये, फिर उससे आगे नाम की प्राप्ति होती है। स्वामी जी महाराज ने फरमाया है।

नाम रहे चौथे पद माहीं, ये ढूंढे त्रिलोकी माहि।

इस जुबान से किसी नाम का जाप करना, राधास्वामी नाम का, राम राम का अल्लाह का या वाहेगुरु का। यह ग़लत नहीं है। ये वर्णात्मिक नाम मन को इकट्ठा करने के लिए हैं। जब तक किसी का मन इकट्ठा नहीं होगा उसके अन्तर प्रकाश पैदा नहीं होगा। शरीर, मन, प्रकाश और शब्द ये हमारी देह हैं। इनमें जो असल में हम हैं वह रहते हैं। इसलिए मन को इकट्ठा करने के लिए चाहे राधास्वामी नाम से

करो, चाहे राम-राम से करो चाहे पांच नाम से करो, अल्लाह से करो, चाहे वाहेगुरु से करो और चाहे एक दो तीन चार पांच गिनती करके करो। भाव तो मन को इकट्ठा करने से है। मैं सच्चाई वर्णन कर रहा हूं। एक गद्दीवाला दूसरी गद्दियों का खण्डन करता है, ये सब कोरे हैं। किसी को सार का पता नहीं और कोई सच्चाई नहीं बताता। सब हमको अपने पंथ और अपने डेरों में फंसाते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि मानव जाति आपस में बँट गई। सन्तमत आया था संसार में एकता पैदा करने के लिए मगर यह भी बंट गया, जगह-जगह गद्दियाँ बन गई। इसका परिणाम? आपस में द्वेष आ गया। एक गुरु का चोला छोड़ने के बाद उसके कई-कई चेले अपनी-अपनी गद्दियाँ बनाकर एक दूसरे का खण्डन करते हैं।

दाता! आपने काम दिया था। पता नहीं मैंने जो कुछ किया है और कर रहा हूँ, यह ठीक है या ग़लत है मगर मेरी नीयत साफ है। आपकी आज्ञा का पालन करता हूं और अपना कर्तव्य पूरा करता हूं कोई सुने या न सुने।

सनातन धर्म के अनुसार और धर्मदास के कहने के अनुसार और अपने अनुभव के आधार पर मैं यह कहता हूँ कि ऐ मानव! तू नाम के पीछे दौड़ता है लेकिन नाम कब मिलता है? नाम प्रकाश से आगे मिलता है। प्रकाश तक पहुंचने के लिए जो साधन हैं जब तक कोई आदमी वह साधन नहीं करता वह प्रकाशमय नहीं हो सकता। वे साधन क्या है? अभ्यास के समय जो विभिन्न प्रकार के रंग रूप शक्लें और विचार तुम्हारे सामने आते हैं वे तुम्हारे मस्तिष्क पर पड़े हुये जो संस्कार

होते हैं, उनको दूर करने के लिए अपने अन्तर पहले किसी सर्गुण स्वरूप का प्रेम पैदा करो। माँ बाप की सेवा का या गुरु की सेवा का प्रेम पैदा करो। पब्लिक की भलाई का प्रेम पैदा करो। जब एक का विचार मस्तिष्क में बैठ जायेगा तो बाकी सब विचार समाप्त हो जायेंगे।

एक ही साधे सब सधे,

सब साधे सब जाय।

इसलिए नाम को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले किसी वस्तु या व्यक्ति से प्रेम है। यह इश्के मजाज़ी है। अर्थात् प्रकृति की किसी वस्तु में लय हो जाना इश्के मजाज़ी है। संसार केवल स्त्री के प्रेम को ही इश्के मजाज़ी समझता है। राम या कृष्ण गुरु या देवी देवता एक की पूजा करोगे तो तुम्हारा मन अनेक संकल्पों को छोड़कर एक खब्त में आ जायेगा और एक अवस्था में ठहर जायेगा और फिर तुमको यदि मालिक को मिलने की खोज है तो फिर प्रकाश से आगे तुमको नाम की प्राप्ति होगी। आजकल लोग एक दो किताबें पढ़कर या तो शेर लिखना आरम्भ कर देते हैं। उनको नाम की प्राप्ति नहीं होती। नाम की प्राप्ति अमल करने से और साधन अभ्यास से होती है। मेरे पास लोग आते हैं। मैंने कभी किसी से यह नहीं कहा कि तू अपने गुरु का ध्यान छोड़ दे। सर्गुण स्वरूप का ध्यान आवश्यक है लेकिन केवल सर्गुण तक ही सीमित रहने से तुम भवसागर से पार नहीं जा सकते। जो लोग सारा जीवन हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज का हजूर दाता दयाल जी महाराज का बाबे फकीर का या कृष्ण का ही ध्यान करते मर गये उनको नाम की प्राप्ति नहीं हुई। नाम की प्राप्ति प्रकाश से आगे है। हज़ूर महाराज ने अपनी प्रेम

बाणी में लिखा है कि मरते समय जीव के सामने फिल्म चलती है। जिस गुरु से नाम लिया हुआ होता है वह भी आ जाता है और शब्द भी सुना देता है। उस जीव को भी कुछ समय के लिए ऊपर के लोकों में रहना पड़ेगा, वहां उसको गुरु का दर्शन और सत्संग भी मिलता रहेगा फिर जब कोई समय का संत सत्गुरु इस संसार में आयेगा तो वह जीव भी जन्म लेकर उस संत सत्गुरु के सम्पर्क में आयेगा और बाकी की कमाई पूरी करके अपने आदघर वापिस पहुंच जायेगा।

मैं ऊंचा बोल रहा हूँ। यह मेरे वश की बात नहीं है जिस अवस्था में कोई होता है वह उसी मंजिल की बात करता है। नाम की प्राप्ति के लिए जल्दी मत करो। वह व्यक्ति कहता है कि मैं जब अभ्यास करने बैठता हूं तो शरीर पीड़ करने लग जाता है और सुन्न हो जाता है। अरे भाई! जिसको शरीर से प्यार है उसके लिए नाम नहीं है। प्रारम्भ में तो शरीर सुन्न होगा ही।

दाता! यदि मैं भूल में हूं तो मेरा दोष क्षमा होना चाहिए क्योंकि मैंने अपनी नीयत को साफ रखकर काम किया है और अपने निजी स्वार्थ के लिए कोई काम नहीं किया। लेकिन मेरे स्पष्ट वर्णन से हानि भी है। एक तो मुझे धन नहीं आता और दूसरे जीवों का जो अन्ध विश्वास है वह टूटता है। लेकिन इसने तो टूटना ही है आज नहीं तो कल या कल नहीं तो दो दिन बाद। जो कुछ मेरे पास है या मैं देना चाहता हूँ उसको तो लेने के लिए कोई आता नहीं, जो भी आता है अपने सांसारिक कामों के लिए आता है। किसी के बेटा नहीं है, किसी का विवाह नहीं हुआ है, कोई बीमार है और किसी का मुकद्दमा है। यह तो संसार का

चक्कर है। नाम वालों का इन चीज़ों से क्या सम्बन्ध? कर्म का भोग सबको भोगना पड़ता है। बड़े-बड़े संत बीमार हुये। उनके लड़के मरे। जब यह भी न बच सके तो फिर हमें करना क्या है? जब तक शरीर में हो और मन में हो अपनी नीयत को साफ रखकर काम करो। अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी की हानि मत करो। जब तुम्हारी नीयत साफ होगी तो आगे के लिए तुम्हारे कर्म नहीं बनेंगे। लेकिन जो पिछले किये हुये हैं वे तो अवश्य भोगने पड़ेंगे। मैं कई बार सोचा करता हूँ कि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी। मैं क्या शिक्षा बदलूँ? जब मैं देखता हूँ कि पिछले कर्म सबको भोगने पड़ते हैं तो मैं फिर मैं यही कहता हूं कि ऐ मानव! पिछले कर्म खुशी से भोग और आगे कोई बुरा कर्म न कर ताकि तुम्हारे बुरे कर्म न बनें। यह संसार में रहने का ढ़ंग है और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने भी निम्नलिखित शब्द में फरमाया है-

ऐ मेरे प्यारे भाई देखो सम्भल कर चलना।
खोटे कर्म न करना, खोटी न बात कहना।
दुख दोगे दुख मिलेगा सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को फिर ग़म पड़ेगा सहना।
कौल और खियाल करतब दरया से हैं मुशाबा।
तुम देखना न इसकी लहरों में पड़के बहना।
मन इन्द्रियों पे भाई ज़ब्त रखना तुम बराबर।
ज़ाबत बने रहोगे खुशहाल होके रहना।
अपनी निशिस्त रखना तुम आत्मा पे हरदम।

आत्म स्वरूप रहकर संसार में विचरना।

आत्म स्वरूप होना क्या है? अपने अन्तर में प्रकाश मय होना। परमात्मा प्रकाश स्वरूप है और आत्मा उसकी अंश है। जब आत्मा शरीर में आती है तो मन चित्त बुद्ध अहंकार पैदा हो जाते हैं। कोई आदमी चाहे लाख अभ्यास करे लेकिन यदि उसका मन शुद्ध नहीं है तो वह प्रकाश को पकड़ नहीं सकता और यदि वह बलपूर्वक पकड़ेगा भी तो उसकी वासनायें बढ़ जायेंगी। इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। किस को नाम दूं? नाम का हरेक आदमी अधिकारी नहीं है। तुम्हारे मन में बड़ी भारी शक्ति है। जिस विचार को लेकर सुमिरन ध्यान करोगे प्रकृति के नियम अनुसार तुम्हारी वह आशा पूर्ण होनी चाहिए। तुमने देखा होगा Mesmerism वाले दीवार पर एक काला निशान लगाकर उसकी ओर प्रतिदिन टिकटिकी लगाकर देखते हैं और चाहते हैं कि यह फूल बन जाये। जब उनको यह निशान फूल की शक्ल में दिखाई देने लग जाता है तो उस समय उनमें सिद्धी शक्ति आ जाती है। ऐसे ही सुमिरन ध्यान और भजन से जब अभ्यासी की Will Power बढ़ जाती है तो यदि उसकी वासनायें गन्दी हैं तो वे बुरी वासनायें उससे बुरा काम अवश्य करायेंगी और उसकी हानि हो जायेगी। मैं इसीलिए सदा सत्संग कराया करता हूं ताकि जीवों को समझ आये और उनको Line of Action मिल जाये। यूं तो मेरे वचन ही नामदान हैं।

गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन नाम हराम है, जा पूछो वेद पुरान।

गुरु नाम है समझ, विवेक और ज्ञान का। यदि समझ के बिना

नाम जपोगे तो नाम तुमको खा जायेगा। आजकल गुरुओं ने अपने नाम, अपने मान और अपने डेरों के लिए जो भी आया उसको नाम दे दिया। यह नाम अपने डेरे अपने नाम और अपने चेले बनाने के लिए दिया गया है। प्रकाश को प्राप्त करके के लिए अपने विचारों को शुद्ध रखो, कल्याण कारी विचार रखो और अच्छे विचार रखो। आज जब मैं मंदिर में आया तो विचार आया कि फकीर! तूने यह क्या मकड़ी का जाला बना लिया है। मैं स्वयं इस काम से सुखी नहीं हूं। क्यों? लोग आते हैं किसी का कोई झगड़ा है किसी का कोई फसाद है, एक दूसरे के विरुद्ध कहते हैं। जो सत्संगी होके इन बातों को भूल नहीं सकता वह काहे का सत्संगी है।

सेवक सेवा में रहे, कभी न मोड़े अंग।
दुख सुख सिर पर सहे, कभी न हो चित्त भंग।

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने यह काम करने की मुझे आज्ञा दी थी। मैं हूं सेवक। दुख और सुख अपने सिर पर सहता हूं और निष्कपट होके अपना कर्तव्य करता हूं, जिसकी इच्छा करे मेरे सत्संग में आए जिसकी इच्छा न करे न आए। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे फरमाया था।

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी।

तुम लोग आये हो अपना जीवन बनाओ। यदि मन गन्दा है तो

तुम प्रकाशमय नहीं हो सकते। यदि बलपूर्वक प्रकाश प्रकट करोगे तो हानि उठाओगे जैसे तान्त्रिक विद्या वाले साधन करने के बाद दूसरों को हानि पहुंचाते हैं।

मलियागिर पर बसे भबंगा,
विष अमृत रहे एको संगा।
तिनका तोड़ दियो परवाना,
तब हम पाय साहिब पद निर्वाना।

मलियागर चन्दन है। इसके साथ सांप लिपटे रहते हैं ऐसे ही हमारे शरीर और मन और हमारे जीवन में नेकी भी है और बदी भी है। इस नेकी और बदी से कोई भी न बच सका। धर्मदास जी कहते हैं कि 'तिनका तोड़ दिया परवाना।' परवाना कहते हैं आज्ञा को। अर्थात् गुरु ने मुझे आज्ञा दी कि ऐ फकीर।

यह तो नहीं तेरा देश, देश है विराना।
यहां सब बेगाने बसें, कोई नहीं यगाना।

गुरु के सत्संग में मुझे ज्ञान हो गया कि मैं न शरीर हूं और न मन हूं। मेरा घर प्रकाश से आगे है। शरीर में तो नेकी भी है और बदी भी है। यह त्रिगुणात्मक जगत है। इसी लिए हिन्दुओं ने, मुसलमानों ने और संतों ने प्रकाशमय होने के बारे में कहा। हिन्दु यज्ञ करते हैं। इसका भाव क्या है? अपने अन्तर ज्योति जलाकर अपने मन के सब विचारों को उसमें जला दो। लेकिन जब अन्तरमुखी तो कोई होता नहीं बाहर में ही आग जलाकर उसमें आहुतियाँ डालते रहते हैं। पदनिर्वाण का साधन प्रकाश से आगे है। आगे भी अभ्यास के दर्जे हैं। जिस प्रकार शरीर के

चक्कर हैं। कबीर साहिब ने तीन शब्दों में इनका वर्णन किया है–

1. कर नैनों दीदार, महल में प्यारा है।
2. कर नैनों दीदार, यह पिण्ड से न्यारा है।
3. तू सूरत नैन निहार, यह अण्ड के पारा है।

अर्थात् वह मन से परे है। स्वामी जी महाराज ने अपने शब्दों में वर्णन किया है और मैंने भी यही कहा। अन्तर केवल शब्दों का है लेकिन भाव एक है।

धनी धर्मदास कबीर बल गाजे,

गुरु प्रताप आरती साजे।

धर्मदास जी कहते हैं कि मैं कबीर साहिब जी के बल से बोलता हूँ ऐसे ही हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना। मैं भी उनकी आज्ञा से यह काम कर रहा हूं। इसलिए मेरा किसी पर उपकार नहीं है मेरा तो यह कर्तव्य है। कई बार मुझे यह विचार आता है कि लोग मेरा ध्यान करते हैं। उनके अन्तर राम रूप में प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है। यह क्या मामला है? मैं बाहर जाता हूं। लोग मेरे नाम के करिश्मे बताते हैं तो मेरे पांव से मिट्टी निकल जाती है। एक आदमी ने मुझे बताया कि मैं बीमार था। डाक्टरों के पास फिरता रहा लेकिन कोई आराम न आया। फिर मैं धाम पर गया वहां मेरे अन्तर आपका रूप प्रकट हुआ और कहा कि चने खाया करो, तुम ठीक हो जाओगे। मैंने चने खाने आरम्भ कर दिये। अब मुझे 6 महीने से बिल्कुल आराम है। अब मैं सोचता हूँ कि मैं तो गया नहीं और न ही मुझे कोई पता है तो फिर कौन गया? सब का अपना

विश्वास और श्रद्धा है, मैं नहीं जाता। अब बैसाखी के बाद अमेरिका जा रहा हूं। पिछली बार अमेरिका गया था तो प्रैज़िडेन्ट निक्सन का बोड़ीगार्ड और दो तीन डाक्टर काफी दूर से हवाई जहाज द्वारा मेरे पास आये और कहने लगे कि आपका रूप हमारे अन्तर प्रकट होता है और हमारे कई काम कर जाता है लेकिन मैंने उनसे साफ कह दिया कि मैं नहीं जाता। सब तुम्हारा अपना ही विश्वास है। वहां मेरे सत्संग में एक आदमी की समाधि लग गई। दूसरे दिन उसने सारा समाचार लिखकर हमें दे दिया। उसने लिखा कि आपका रूप मुझे वहां ले गया, यह कर दिया और वह कर दिया। ऐसी घटनायें सुन कर मैं सदा सोचा करता हूं कि फकीर! ऐसी बातों को सुनकर यदि तू लोगों को सच्चाई नहीं बतायेगा तो लोग तुमको धन देगें मान प्रतिष्ठा करेंगे। यह धन मान प्रतिष्ठा तुमको खा जायेगी। तभी तो मैं कहता हूं कि ऐ वर्तमान महात्माओं और गुरुओं! गुरु पदवी पर आने से जो अनुभव मुझे हुआ है यदि सचमुच तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होता है तो यदि तुम संसार को सच्चाई नहीं बताते और लोगों से गलत ढंग से और उनको अज्ञान में रखकर धन, मान प्रतिष्ठा लेते हो तो तुम संसार को लूटते हो और भूल में हो। इसीलिए मैं फकीर के चोले में अवतार लेकर अनामी धाम से संसार को यह बताने के लिए आया हूं कि ऐ मानव जाति! होश कर। तुमको अज्ञान में रखकर लूटा जा रहा है। क्या देवी और क्या देवता, किसी को कुछ नहीं देता। कुछ दिन हुये आप लोगों ने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि दो भाई ज्वालाजी हिमाचल प्रदेश गये। देवी की मूर्ति के सामने बड़े भाई ने छोटे भाई का सिर काट दिया। उसने बताया कि देवी ने मुझे तीन बलि देने को कहा है। यह अज्ञानता है। न कोई देवी बाहर से किसी को

कुछ कहने के लिए आती है और न कोई देवता। न बाबा फकीर किसी के अन्तर कुछ कहने के लिए जाता है और न हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज। जिस प्रकार के संस्कार मस्तिष्क पर पड़े हुये होते हैं वही शक्ल बनाकर आदमी के सामने आते हैं। क्योंकि जीव निबल-अबल और अज्ञानी है, इसलिए मैं आया हूं सत्यता वर्णन करने के लिए। जो कुछ मैं तुमसे कहता हूं यही मेरा नाम दान है जो समझ सकते हैं वे समझें। कल मैंने सत्संग में बताया था कि स्वामी जी महाराज ने चैत्र महीने का वर्णन करते हुए फरमाया है।

सतगुरु सन्त दया करी, भेद बताया गूढ़।
अब सुन जीव न चेतई, तो जानो अति मूढ़।

मैंने अपने आपको समय का सन्त सत्गुरु कहा है। कई बार सोचता हूं कि फकीर! एक दिन मर जाना है, क्या तू लोगों को धोखा तो नहीं देता? नहीं। सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान और सच्ची समझ का और वही मैं संसार को देता हूं। स्वामी जी कहते हैं कि यदि अब भी किसी को समझ नहीं आई तो वह मूढ़ है। मैं कई बार अपने आपसे यह प्रश्न भी किया करता हूं कि तुम्हें लोगों को उपदेश करने का क्या अधिकार है? कोई नहीं। क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता करना और जीवों को भवसागर से पार जाने के लिए उनकी सहायता करना और जगत कल्याण का काम करना। इसलिए मैंने जो स्वयं अनुभव किया है वह लोगों को बताता रहता हूं। यदि मान लो कि यह गलत है तो मैं दोषी नहीं हूं क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे इस काम को करने की आज्ञा दी थी और फिर जब मैं हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के

पास 1942 में गया था तो उन्होंने फरमाया था कि फकीर! मुझसे सच्चाई वर्णन नहीं हो सकी क्योंकि जीव अधिकारी नहीं। तुम निर्भय होके काम कर जाओ मैं तुम्हारा संरक्षक रहूंगा। जो कुछ मैंने जीवन में समझा उसकी पुष्टि बाणी करती है। आप लोग आ जाते हैं। जहां तक हो सके अपनी नीयत को साफ रखो। अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी से हेरा फेरी मत करो। धोखा मत करो। यही मैंने सारा जीवन किया है।

मैं अपना कर्म भोगता हूं। मैंने मुफ्त आंखों का हस्पताल बनाया। मंदिर में जो रुपया आता है उसके लिए यह नियम है कि उसको उचित ढंग से एक उचित सीमा तक खर्च किया जाये। हस्पताल तो मैंने खोल दिया लेकिन इसका खर्च बहुत है। यद्यपि बहुत बड़े-बड़े और धनी आदमी मेरे जानकार हैं लेकिन मैं किसी को कहना नहीं चाहता क्योंकि मुझे मांगने की आदत नहीं है। यदि चलेगा तो चलाऊंगा वरना बन्द कर दूंगा। यदि खुशी से कोई देना चाहता है तो बड़ी खुशी से दे।

निज चित सोधें मर परबाधें,
जीव दोष नहिं दृष्टि।
अपने भाव में वरते निस दिन,
करे दया की वृष्टि।

मुझे अपने भाव में आपने पहुंचाया। अब वहां रहने का यत्न करता हूं और चाहता हूं कि जो दुखी मेरे पास आयें वे सुखी हो जायें। मैं केवल यही कुछ कर सकता। हो सकता है मेरी शुभ भावना लोगों की सहायता करती हों लेकिन मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। यदि ये बड़े-बड़े महात्मा भी सचमुच नहीं जाते थे या मौजूदा महात्मा भी नहीं जाते हैं

और उन्होंने परदा रखा और लोगों को अज्ञान में रखकर उनसे झूठी मान प्रतिष्ठा और धन लिए हैं, तो तुम तो कहोगे कि वे सतलोग गये मगर मैं कहना नहीं चाहता। क्या कहूं? केवल इतना ही कहता हूं कि उन्होंने संसार को धोखा दिया है। यह धोखा नहीं तो और क्या है। इस सच्चाई को खुले शब्दों में पब्लिक में न स्वामी जी महाराज ने कहा है और न कबीर साहिब ने कहा है। कबीर साहिब ने धर्मदास को यह भेद बताया मगर साथ ही यह कह दिया।

धर्मदास तोहे लाख दुहाई,

सार भेद बाहर नहीं जाई।

स्वामी जी महाराज ने अपनी बाणी में फरमाया है।

संत बिना कोई भेद न जाने,

वो तोहे कहे अलग में।

उन्होंने क्यों परदा रखा? उस समय विदेशी शासन था कबीर साहिब ने एक शब्द में लिखा है।

सांच कहूं तो मारसी,

यह तुरकानी जोर।

बात कहूं परलोक की,

कर गह पकड़े चोर।

पिछला समय और था। अब हमारा राज है इसलिए इस परदे को जो पिछले सन्तों ने रखा अब खोलने की आवश्यकता है ताकि भारत वर्ष में धार्मिक और पांथिक एकता पैदा हो।

सब को राधास्वामी!

नकल पत्र दिनांक 8 जून, 1976
जो कि
परमसन्त परमदयाल जी महाराज ने विरजीनिया (Virginia) अमेरिका से लिखा।

प्यारे प्यारे भक्त जी, मेरी पहुंचे आपको राधास्वामी।

जिन्दगी गुज़र रही है मेरी, बनके अकामी और निष्कामी।

मौज लाई थी चोले फ़कीर मे, ख्वाहिश थी मिले अनामी।

दाता की है दया मुझपर, दिया काम था करने को।

इस काम से मिट गये भरम, मेरे और आय देश दवामी।

दो दिन बाद दाना पानी California लिए जा रहा है। क्यों? पता नहीं।

जिन्दगी गुजर रही है मौज पर मौज का है आसरा।

क्या कहूं मैं, क्या हूं करता, यह नहीं मैं जानता।

एक समाचार पत्र का Cutting और एक पत्र जो एक व्यक्ति ने The Secret of Secrets नामी किताब पढ़कर लिखा है। भेज रहा हूँ। इनको जो चाहो करो। यदि इनका अनुवाद मानव मंदिर में भेज सको तो भेज देना या अंग्रेज़ी में ही प्रकाशित करा देना। साथ ही D.D. Kapila साहिब और प्रोफैसर भगत राम साहिब को यह पत्र दिखा देना। यह उनकी दया और परिश्रम का फल है। Credit उनको जाना चाहिए मुझे नहीं।

यहां पर खर्च बहुत हो रहा है। लेकिन मेरा नहीं जो कुछ बाहर से आता है वह लंगर और किराया आदि पर खर्च हो रहा है। 1977 में अमेरिका में Whole world Religious Conference होने का निश्चय हुआ है। डाक्टर I.C. Sharma भी उसके Director होंगे। इसलिए अगले साल फिर अमेरिका आऊंगा। अब मैं एक पत्र California से लिखूंगा और 27.6.76 को न्यूयार्क से दिल्ली आ जाऊंगा।

भक्त जी और सत्संगियों! मैं खुश हूं कि हजूर दाता दयाल जी महाराज का ऋण की 'शिक्षा को बदल जाना फकीर' बदल चला। पता नहीं ठीक किया या ग़लत किया। परदा रखता तो मन्दिर ज़रा ज्यादा पैसे वाला हो जाता। अब मौज है मेरी सेहत ठीक है।

My male mammy (Dr. Paras Ram) is quite healthy. She cooks for me and feeds me like a mother to child.

अमेरिका के दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित हजूर परमदयाल जी महाराज के जीवन और उन की शिक्षा पर एक झलक

Faqir Dayal :

What They See Is an Illusion

The Virginian-Pilot

TIDEWATER LIVING

A6 Monday, June7, 1976

By CAMMY SESSA

Virginian-Pilot writer

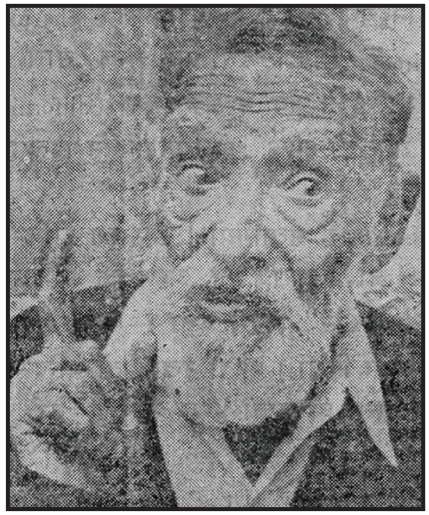

FAQIR DAYAL

Indian mystic, author

VIRGINIA BEACH:— Faqir Dayal, 90, is a little man barely 5 feet tall but He carries a big name and a heavy responsibility.

Known as "His Holiness, Param Sant Param Dayal Pandit Faqir Chand Ji Maharaj", He claims His purpose in life is "to change the world's thoughts."

Dr. Paras Ram Aggarwal, left, and Faqir Dayal are house guests of Dr. I.C. Sharma, right-

"His name means 'supreme saint and mystic," said Dr. I. C. Sharma, a visiting professor of philosophy at Old Dominon University and the author of several books and articles on philosophy, religion, politics and scriptures. Sharma's latest book, "Karma and Reincarnation" is published by Harper and Row (1975).

Sharma explained that Dayal acquired the title of "His Holiness" from thousands of followers in India and other parts of the world including the United States.

"Many hundreds of people have experienced the power of His spiritual impact', said Sharma. "Many say he appears to them in time of need; some say that He has healed and cured them; and many events which seem to be miracles have been credited to him although He does not claim to be personally aware of them."

Dayal has been staying at Sharma's Virginia Beach home since His arrival from Hoshiarpur, India. two weeks ago. He has given many lectures on philosophy and meditation. He intends to leave Thursday.

Dayal doesn't fit the image of the customary Indian sage. He wears no special robes nor priestly garments and He lectured for a short time recently with a woolen cap pulled down over His ears. "My experience has taught me that humanism is much better than spiritualism he said.

Paras Ram Aggarwal, a medical doctor, accompanied Dayal on His trip to Tide water. "He (Dayal) is my spiritual master," said Aggarwal "I have been attending Him for 19 years."

"I am an old man", said Dayal. "I could be subject to many aliments so I need a doctor with me." But there is nothing frail about Dayal despite His age. He bends His knees with agility as He crosses His legs, yoga fashion. He sits perfectly straight, not leaning on a backrest, reads without glasses, and speaks with a steady voice.

He raised that voice in vehemently when He denied

knowledge of any miracles. He pointed to a note Book and said, "Carefully put His down. I have no knowledge of these things; it I appear to someone, I swear, I am not aware of it. It is in their own mind..... I am convinced that what they see is an illusion or suggestion of me It is not me; it is their own faith and faith is the essence of all beliefs and miracles."

Dayal stopped, lit a cigarette, adjusted His hearing aid, and continued:

"I have realized that when people belong to different religions; they honestly feel the presence of their spiritual ideal whether it is Krishna, if they are Hindu, Chritst, if they are Chirstians, Buddhha, if they are Buddists and so on.

"Actually, their experiences are not objective. It is a person's inner attitude that makes him feel his particular master's presence.

"No one comes from the outside," he added. "It is because of training, impressions, and suggestions and limiting the mind that a practical form appears and helps them," Dayal said. "That's why they are so sure of their faith But this also creates problems.

"As a result of this, narrow-mindedness and ignorance, the followers of each religion have brought about division and created walls and wars between sects and religions, God is above the universal mind.

"From this I have concluded that the real God is not in the mental sphere," he added. "That man which is ultrasound and light".

Dayal said He promised His own guru or spiritual father, Maharishi Shiv Vrat Lal, who died in 1939 that he would carry this knowledge of truth to the world. "That's why as an old man, I must be travelling even though it is more comfortable at home," said Dayal.

Dayal says He does not initiate His followers into meditation.

" A man who does meditation will get only that thing

that which is in his subconscious mind," He said "Without warning to keep the mind pure, meditation can be dangerous. Mind must be pure and thoughts good to meditate properly. I cannot know what thoughts are in the minds of my followers, so I do not advise them to meditate.

Dayal does meditate himself most of the day. He rarely sleeps and eats just a small portion of food in the morning and then drinks milk and other liquids during the day. He says He needs neither food nor rest to sustain His energy because He meditates completely.

He accepts no money from His disciples, "because I do live with my son and he supports me."

Dayal has founded an ashram (yoga retreat house), medical and dental clinics, and an eye hospital that are run by His disciples. "All the services are free; people can come and be attended to." The doctors and workers give their time for love of Him, Dayal says.

Dayal was married at 13. Served in the British army, and was employed by the Indian Railways as a Station Master.

He said that many Indian Gurus have come to the United States to enlighten, but they are failing

"They (the gurus) are taking money and then not solving any problems", He said.

हजूर परम दयाल जी महाराज ने थोड़ा समय हुआ एक (The Secret of Secrets) अर्थात् रहस्यों का रहस्य नामी पुस्तक अंग्रेज़ी में लिखी। उसको अमरीका के लोगों ने पढ़ा। एक सज्जन ने पुस्तक के विषय में अपने विचार प्रगट किये हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

3315 Powhatan Street.
Baltimore, Maryland 212 6
June 3, 1976

His Holiness Param Sant Param Dayal, Faqir Chand

Ji Maharaj.

Obeisance of you. I bow at your Holy feet. I have just been given the supreme favour of reading the "**Secret of Secrets".** My gratitude knows no bounds. My heart overflows with love. It is true. It is true. It is true. Oh, seekers of Eternal Truth, hear Faqir Chand Ji Maharaj.

Do not think me immodest if I conform what His Holiness reveals. It is none of my doing if it is ordained to be so. The Eternal Master has so decreed it. As before the Eternal One deals briefly with this one. In a flash all that was shown me in a violen and intense disillusionment (enlightenment) years ago is confirmed in this price-less little book in the only language suited to conveying the penultimate-namely, simple, plain language sechored in the immense heart of the experiences of a Param Sant, a true Maharaj.

Nowhere else have I seen such flaming inspiration of truth. Nor do I hope to see such.

Meeting you has been the most profound of events.

With unbounded gratitude and love
One who sat with you for a few
Minutes along the way.

Sd/-
Fread Clifton

सत्संग

परमसन्त हज़ूर परमदयाल जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर

13-04-1977 (प्रातः काल)

राधास्वामी !

मैं सोचता हूँ कि फ़कीर ! तुम यह काम क्यों करते हो ? जब राम को दुनिया से वैराग्य हो गया और उदासी आ गई तो महाराजा दशरथ ने उनको गुरु वशिष्ट के पास भेजा। राम चन्द्र जी ने गुरु वशिष्ट जी से कहा कि मैं दुखी हूँ। वशिष्ट जी ने कहा कि राम ! तुम ब्रह्म के अवतार हो और किसी विशेष काम के लिए संसार में आये हो। क्या मिशन बताया ? ***दैव-दैव आलसी ही पुकारते*** हैं। इस एक विचार को लेकर रामचन्द्र जी ने राक्षसों को मारा और दुनिया में क्या कुछ नहीं किया। ऐसे ही मैं भी संसार से दुखी होकर २४ घण्टे लगातार रोने के बाद अपने एक दृश्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणकमलों में गया था। उन्होंने मुझे फरमाया:

1. ***तू तो आया नर देही में धर फ़कीर का भेसा।***
   दुखी जीव को अंग लगा के ले जा गुरु के देसा॥
   तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी।
   तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी॥
2. ***तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही।***

जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही॥

3. ***ले परशाद यह सत्संगत का हो जा भव निधि तारन।***

मेरे जिम्मे तीन कर्त्तव्य हैं। इनको पूरा करने के लिए मैं घसीटा जा रहा हूँ। अपने आप से पूछता हूँ कि तू संसार को क्या कहना चाहता है ? सुनो ! मैं बचपन से ही राम को मिलने निकला था। कभी-कभी मैं प्रेम में आकर गाया करता था:

वतन दुराडा देश दुराडा पिआ मैं लम्बड़े राही।
साईं मैंनूं तोड़ पहुँचाई॥

अब मैं अपने आप से पूछता हूँ कि क्या तू तोड़ पहुँच गया ? तोड़ क्या पहुँचना था ! जब मैं तोड़ पहुँचता हूँ तो 'मैं' ही नहीं रहती। फिर पहुँचेगा कौन ? यह मेरा अनुभव है। मैं बैसाखी के इन चार सत्संगों में अपना अनुभव कहना चाहता हूँ। पहली बात तो यह है कि हम नाम लेते हैं और यह आशा करते हैं कि गुरु हमको सत्लोक ले जायेगा और हमारी मुक्ति हो जायेगी। इसलिए लोग गुरुओं की सेवा करते हैं, रूपये देते हैं और गुरुओं के पाँव धो कर पीते हैं और गुरुओं के गुण गाते हैं। मैंने बहुत कुछ किया। अब मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि फकीर ! क्या तेरी मुक्ति हो गई ? क्या राम-राम जपने से या राधास्वामी-राधास्वामी जपने से या गुरु की सेवा करने से आदमी की मुक्ति हो सकती है ? नहीं। क्यों ? विज्ञान ने सिद्ध किया है कि मरने वाले के अन्तर से कोई चीज़ निकलती है। परदे(Screen) पर कोई विशेष मसाला लगाकर उन्होंने सूक्ष्म शरीर का फोटो भी देखा। मरने से पहले आदमी का वज़न किया ओर मरने के तुरन्त बाद फिर तोला तो कोई दस ग्राम, कोई बीस

ग्राम, कोई पच्चीस ग्राम कम हुआ। क्यों? मेरे अनुभव में यह बात आई है कि जो चीज़ हमारे शरीर में रहती हुई सबकी साक्षी है, प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है; वह एक अलग चीज़ है। जब कभी मैं अपने आपको अलग करके देखता हूँ तो उसका वज़न नहीं है। फिर उसका वज़न क्यों आता है? स्थूल चीज़ों की वासनाओं के कारण उसका वज़न होता है। **जब तक किसी आदमी का राम के रूप से, कृष्ण के रूप से, गुरु के रूप से, किसी तीर्थ से या किसी भी स्थूल चीज़ से प्रेम है या लगाव है, तो उस प्रेम या लगाव के कारण उसका सूक्ष्म शरीर भारी होगा और भारी होने के कारण पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसको ऊपर नहीं जाने देगी, बल्कि दक्षिण की ओर लायेगी।** इसी कारण धर्मराज और यमराज का डेरा दक्षिण की ओर माना गया है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने भवसागर से पार करने का कर्त्तव्य लगाया है। मैं किसी को फूंक तो मार नहीं सकता। सच्चा ज्ञान देता हूँ। जो आदमी इस पर अमल करेगा वह पार होगा। अगर वासनायें होंगी तो सूक्ष्म शरीर भारी होगा। यह तो है विज्ञान। हज़ूर महाराज राय सालिग राम साहिब जी महाराज जिन्होंने यह पंथ चलाया है, उन्होंने अपनी प्रेम वाणी में लिखा है कि अन्त समय जीव के सामने फिल्म चलती है, गुरु भी आ जाता है और शब्द भी सुना देता है। फिर उसको कुछ समय ऊपर के लोकों में रहना पड़ता है। फिर जब कोई सन्त-सद्गुरु इस संसार में आता है, तो वह जीव भी चोला धारण करके इस संसार में आता है और उस सन्त-सद्गुरु के सम्पर्क में आकर बाकी की कमाई पूरी करके अपने निजघर में पहुँच जाता है। इससे सिद्ध हुआ

कि जो आदमी किसी की देह से प्रेम करता हुआ मरेगा, उसको भी दूसरा चोला लेना पड़ेगा। यह दूसरी बात है कि उसको चोला अच्छा मिले और वह नेक बने। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी फरमाया करते थे कि जिन को हरिद्वार से प्रेम है, वे हरिद्वार की मछलियां बनेंगे। अब जिनको होशियारपुर से या व्यास से प्रेम है, वे होशियारपुर या व्यास की मछलियां बनेंगे। और सुनो! सनातनधर्म कहता है कि पहले 25 साल ब्रह्मचारी रहो, फिर गृहस्थ-आश्रम, फिर वानप्रस्थ में आओ। स्त्री साथ रहे मगर मियां- बीवी बनके न रहो, फिर संन्यास ले लो। संन्यासी के लिए आज्ञा है कि वह तीन दिन से ज़्यादा एक जगह न रहे ताकि किसी वस्तु के साथ उसका मोह न हो जाये। जड़भरत ने हिरण का बच्चा पाला था। वह बच्चा बड़ा हो कर भाग गया। क्योंकि उसके साथ प्रेम था। इसलिये मरने के बाद जड़भरत हिरण के चोले में गया। मैं अपना अनुभव क्यों कहना चाहता हूँ? गुरु आज्ञा वश। मेरे ग्रह ही ऐसे हैं। मैं आया ही इस काम के लिए हूँ और यह काम करने के लिए विवश हूँ। **इसलिए जो आदमी आवागमन से बचना चाहते हैं, उनसे कहना चाहता हूँ कि जो गुरु यह कहते हैं कि नाम ले लो, तुम सतलोक पहुँच जाओगे-यह गलत है। जब तक किसी आदमी का मरते समय किसी भी स्थूल चीज़ से मोह है और लगाव है, वह पार नहीं जा सकता।** ये महापुरुष आये हुए हैं। मैंने इनको यहाँ की रौनक बढ़ाने के लिए नहीं बुलाया। इनको यहाँ इस लिए बुलाया है कि जो कुछ मैं अपना अनुभव वर्णन करता हूँ, अगर यह गलत है तो ये मुझे बतायें ताकि मैं अपना सुधार करूँ और दूसरों को भी गलत शिक्षा न दूँ। मुझे

किसी बात का कोई दावा नहीं, लेकिन पवित्र विभूति राय सालिगराम साहिब जी महाराज और हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज और संत कबीर की वाणी के अनुसार मैं यह कह सकता हूँ कि मेरा अनुभव ठीक है। मरते समय कई लोग कहते हैं कि हमको लेने के लिए बाबा फ़कीर आये हैं, पालकी या घोड़ा या हवाई जहाज़ लाये हैं, मगर मुझे कोई पता नहीं होता और न ही मैं जाता हूँ। इसलिए तो मैं कहता हूँ कि मैं अवतार लेकर आया हूँ। इन गुरुओं, धर्मों और पंथों ने हमको अज्ञान में रखकर लूटा है। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि अगर मैं ग़लत हूँ तो ये महात्मा मेरा खण्डन करें। **मरने से पहले अगर किसी के मस्तिष्क में गुरु, बाप, बेटा, धनधान्य अर्थात् कोई भी स्थूल चीज़ है, तो चाहे उसने लाख अभ्यास किया हुआ है, ज़मीन की कशिश उसको ऊपर नहीं जाने देगी।**

हम भोले- भाले जीव हैं। **गीता में श्री कृष्ण जी ने कहा है कि जो कुछ है वह मैं ही हूँ और सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दो।** राधास्वामी दयाल ने कहा है:

यह करनी मैं आप कराऊँ, पहुंचाऊँ धुर दरवाजा

तुम निश्चिन्त रह करो प्यारा।

जो आदमी इस वाणी को पढ़ेगा, वह यही समझेगा कि गुरु स्वयं ही करनी करा देंगे। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है, 'आजा शरण बचा लूँगा' कबीर साहिब ने लिखा है – 'मैं ही सब कुछ हूँ'। हज़रत ईसा मसीह ने कहा है–'मैं खुदा का बेटा हूँ, मेरी शरण में आओ'। यह सब अहंभाव है। मगर किसी समय ऐसा करना भी पड़ता

है! क्यों? क्योंकि जीव नादान हैं। उनको समझ नहीं। अगर इस विचार से ऐसी बात कही जाये कि जीव का भला हो ,तो वह धन्य हैं। लेकिन अगर स्वार्थ के विचार से कहा जाता है तो यह महापाप है। तो हम किधर जायें? सब धर्म और पंथ हमको अपनी ओर खींचते हैं। इसलिए मैं आप लोगों से कहना चाहता हूँ कि ऐ मानव! तू किसी के पीछे मत जा, सच्चा बनके अपने अन्तर प्रार्थना कर। वह मालिक घट-घट में है। **जहाँ तुम्हारे अन्तर सच्चाई आई, प्रकृति स्वयं प्रबन्ध करेगी। क्या मैं गुरु को ढूँढ़ने गया था?** अगर मुझे पहले यह पता होता कि राधास्वामीमत ने सब का खण्डन किया है तो मैं कभी भी राधास्वामीमत में न जाता। कौन हिन्दु यह सुन सकता है कि श्री राम और श्री कृष्ण काल के अवतार हैं। मैं रोया करता था कि मालिक! मैं तो तुमको मिलने निकला था, यहाँ कहाँ फंस गया। लेकिन प्रकृति मुझे वहाँ ले गई जहाँ मेरी कुरीद समाप्त हुई। इसलिए सच्चे दिल से प्रार्थना किया करो। **मांगो वह मालिक देगा। किसी धर्म के पीछे जाने की आवश्यकता नहीं। मैंने पन्थों-धर्मों को देखा, इन्होंने संसार को अपने पीछे लगाया। मेरी आँख खुल गई। मुझे प्रतिदिन पत्र आते हैं कि आपका रूप प्रकट हुआ, यह किया और वह किया। मगर मुझे कोई पता नहीं होता। सब तुम्हारे ही मन का खेल है। इसलिए सच्चे बनो और अपनी नीयत को साफ रखो। मैं किसी को धोखे में रखना नहीं चाहता। तुम लोग मेरे पीछे या दूसरे गुरुओं के पीछे दौड़ते हो। क्यों? गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का, अनुभव और विवेक का। उसको पकड़ो, तब कल्याण होगा।**

मैं अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करता हूँ। इसलिए **मैं सारे संसार को संदेश दे रहा हूँ कि जो कुछ तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है वे जिस प्रकार के संस्कार (Suggestions & Impressions)आदमी के मस्तिष्क पर पड़े हुये होते हैं, वही रूप की शक्ल में तुम्हारे सामने आते हैं। न बाबा फ़कीर बाहर से तुम्हारे अन्तर आता है और न कृष्ण। इसी एक अज्ञान और परदे के कारण (हम) मानव जाति नाना प्रकार के धर्मों-सम्प्रदायों में बँट गयी, असल में हम सब एक हैं। मैं अपना कर्त्तव्य सच्चाई से वर्णन किये जा रहा हूँ। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता।** सम्भव है दूसरे महात्मा जाते हों, मगर मैं नहीं जाता। क्योंकि ये महात्मा मेरे सामने मानते हैं कि हम भी नहीं जाते, इसलिए मुझे उत्साह है कि कोई भी किसी के अन्तर नहीं जाता। मगर ये महात्मा-लोग मेरी तरह पब्लिक को नहीं कहते कि हम नहीं जाते। अगर ये महात्मा-लोग दूसरों के अन्तर जाते हैं और उनके काम करते हैं, तो ये धन्य हैं और अगर नहीं जाते और परदा रखकर लोगों से धन-मान-प्रतिष्ठा लेते हैं, तो ये पापी हैं। इन महात्माओं को मैं इसलिए बुलाता हूँ कि ये सब लोगों को नाम देते हैं और चेले बनाते हैं। लेकिन मैं किसी को न चेला बनाता हूँ और न ही किसी को नाम देता हूँ। मैं केवल सत्संग कराता हूँ, ताकि जीवों को जीने का भेद मिल जाये। **मैंने गुरु आज्ञावश शिक्षा को बदला है कि सच्चे बनो और अपने अन्तर में पुकार करो, वह मालिक हर जगह है। सच्ची पुकार को वह सुनता है और वह अवश्य पूरी होगी। वह मालिक तुम्हारे अन्तर है। उसका कोई रूप नहीं। जिस रूप में तुम उसको मानोगे वह उसी रूप में तुम्हारी मनोकामनायें पूरी करेगा।**

लोग सच्चे दिल से मेरे रूप को याद करते हैं, मेरा रूप प्रकट होकर उनके काम कर जाता है, लेकिन मैं तो होता नहीं; तो सिद्ध हुआ कि सब कुछ तुम्हारे अन्तर है और तुम्हारे विश्वास में है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने एक शब्द में लिखा है।

ढूँढ मुझको अपने मन में मैं तो तेरे पास हूँ।
मैं न काशी हूँ न मथुरा मैं न गिरी कैलाश हूँ।
तू हुआ मेरा तो मैं भी देख तेरा बन गया।
कर भरोसा मेरा मैं ही तेरी सच्ची आस हूँ।
तेरे भीतर मेरी बैठक आँख से ले देख अब।
मैं नहीं पृथ्वी की मूरत मैं नहीं आकाश हूँ।

मैं किसी को धोखे में रखकर अपना उल्लू सीधा करना नहीं चाहता। यह बिल्कुल सच्ची बात है। **तुम ध्यान करो, चाहे किसी का भी करो। मैं यह नहीं कहता कि मेरा करो। राम का ध्यान करो, चाहे कृष्ण का ध्यान करो, देवी का करो, देवता का करो, जिसका चाहे करो; मगर एक का करो। जब ध्यान बन जायेगा तो तुम्हारा मनोबल (Will power) बढ़ जायेगा और उससे तुम्हारे संसार के काम होते रहेंगे। बाकी रह गई मुक्ति। यह सब के भाग्य में तो है, मगर समय आने पर।**

नानक कोटन में कोऊं नारायण जिन चेत।

जिस रूप का ध्यान करो, उसको पूर्ण मानो और सब कुछ देने वाला मानो। तुम्हारे ही प्रेम और विश्वास का फल तुमको मिलेगा। वह आदमी कहता है कि बाबा जी ! मैं जब बीमार होता हूँ तो

डाक्टर के पास नहीं जाता। आपको याद करता हूँ, आप प्रकट होते हैं, दवाई बता जाते हैं। मैं वही दवाई बाज़ार से ला कर खा लेता हूँ और स्वस्थ हो जाता हूँ। लेकिन मैं तो जाता नहीं। कौन जाता है? सब जीव का अपना ही विश्वास है। मैं बीमार होता हूँ तो डाक्टरों के पास जाता हूँ। अगर मैं उस आदमी के अन्तर जाकर उसको दवाई बता सकता हूँ और उससे वह स्वस्थ हो जाता है, तो फिर मैं अपने लिए भी दवाई खरीद कर स्वस्थ हो सकता हूँ और मुझे डाक्टरों के पीछे फिरने की क्या आवश्यकता है? सोचो। सब आदमी का विश्वास और श्रद्धा काम करती है। संसार भ्रम में आकर गुरुओं के आगे नाक रगड़ता है और लुटा जा रहा है। मैं संसार को इस लूट से बचाने के लिए आया हूँ। सुना करते थे कि अमुक साधु जो अमृतसर में या लाहौर रहता है, उसको हरिद्वार और दिल्ली में देखा गया, यद्यपि वह उस दिन अमृतसर या लाहौर में अपने आश्रम में मौजूद था। अब मेरा रूप जगह-जगह लोगों के अन्तर प्रकट होता है या साक्षात-रूप में लोग मुझे देखते हैं और बातें करते हैं, लेकिन मैं तो नहीं जाता। तो सिद्ध हुआ कि यह सब आदमी का अपना ही विश्वास है और उसके मन का खेल है। मगर किसी ने यह सच्चाई बताई नहीं और संसार को अज्ञान में रखकर मान-प्रतिष्ठा और धन लिया। चार दिन का जीवन है। मैं अपने-आपको साफ रख के जाना चाहता हूँ। जिसकी इच्छा करे मेरे पास आये, जिसकी इच्छा न करे न आये, मेरी कोई किताब पढ़े या न पढ़े, जिसकी इच्छा हो चार पैसे मन्दिर में दे, जिसकी इच्छा न हो, न दे। मैंने क्या लेना है। मंदिर चले या न चले। मुझे इससे कोई मतलब नहीं, मगर मैं अपनी आत्मा को गन्दा

रख के नहीं जाना चाहता। मैंने बड़े-बड़े सन्तों और महात्माओं की दशा देखी। इनमें से कई बुरी मौत मरे और भारी कष्ट उठाया। मैं सोचता हूँ कि एक आदमी भक्ति करता है, उसको भी कष्ट हुआ। इस वास्ते राम-राम बेशक जपो, मगर अपने कर्म को ठीक रखो और नीयत को साफ रखो और किसी से धोखा-फरेब मत करो। हजूर दाता दयाल जी महाराज के शब्द बहुत ऊँचे थे, मगर कर्म के अनुसार जब अन्तिम आयु में उनको राहु आ गया, वह स्वयं ही धाम छोड़ कर चले गये। इसलिए मैं इन महात्माओं से कहूंगा कि सच्चाई वर्णन करो। मगर इन को भी मैं दोषी नहीं ठहराता क्योंकि तुम लोग भी सच्चाई सुनने के लिए तैयार नहीं हो। देखो! मेरा मंदिर बना देने से या मुझे रुपये देने से तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी। अगर रुपया देने से किसी की मुक्ति हो सकती, तो ये पैसे वाले लोग सब मुक्त हो जाते और बेचारे गरीब इससे वंचित रहते। यह सांसारिक व्यापार है। रुपया दोगे रुपया मिलेगा। किसी दुखिये की सहायता करोगे तो तुम्हारी भी सहायता होगी। मान दोगे, मान मिलेगा और गाली दोगे, तो गाली मिलेगी। मुक्ति तब मिलेगी जब सत्संग में जाकर गुरु का सत्संग सुनोगे, समझोगे और उस पर अमल करोगे। यह है गुरु की भक्ति:

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन-सुन कर फिर मन में गुने।
गुन-गुन काढ़ लेवे तिस सार, काढ़ सार तिस करे अहार॥
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गंवाई।

मुझे खुशी है कि मैंने जीवनभर किसी से धोखा-फरेब नहीं किया और हर एक पहलू से मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया है। मैंने

किसी की नकल नहीं की। हो सकता है कि मैंने जो समझा और अनुभव किया वह सारे का सारा ग़लत हो। इसलिए अगर मैं ग़लत हूँ तो मेरा बड़ी खुशी से खण्डन करो। मुझे कोई दुख नहीं। अगर दूसरों को अपना अनुभव कहने का अधिकार है, तो मुझे भी अधिकार है। दूसरों ने तो दावा किया होगा, मगर मुझे कोई दावा नहीं। जो कुछ मैं कहता हूँ क्योंकि वाणी इसकी पुष्टि करती है, इसलिए मैं समझता हूँ कि यह ठीक है। अब जो कुछ प्रोफैसर वशिष्ट जी ने कहा है यह ठीक है, मगर मैंने जब महात्माओं की दशा देखी तो मैं डर गया। पहले आत्मा, फिर परमात्मा। मुझे अपनी जान प्यारी है। अगर मेरे पास कुछ है तो मुझे पता नहीं। एक आदमी मेरे पास आकर अगर यह कहता है कि बाबा जी! आपका रूप प्रकट हुआ और यह किया और वह किया, मुझे रुपये देता है और मेरी सेवा करता है; अगर मैं उसकी दी हुई चीज़ों को खा जाऊँगा, तो क्या मैं दोषी नहीं? क्योंकि मैं तो गया नहीं और न ही कुछ किया है। **हज़ूर दाता दयाल जी महाराज का उपकार है। उन्होंने फरमाया था कि फ़कीर तू जगत-गुरु है। जगत-गुरु कौन है? जिसको रचना का ज्ञान है कि यह रचना कैसे बनती है और कैसे बिगड़ती है— वह जगत-गुरु है। एक आदमी सारे संसार का गुरु नहीं हो सकता।** मैं प्रोफैसर विशिष्ट जी के साथ सहमत हूँ। लेकिन मैं हूँ पी-एच-डी और एम-ए क्लास को पढ़ाता हूँ। मेरी शिक्षा से छोटी श्रेणी वालों की हानि भी होती है, मगर मैं उनकी हानि को देखूं या अपने आप को देखूं। सन्तों की दशा को देखकर मैं डर गया। इसलिये मैं सच्चाई वर्णन करता हूँ। मैंने क्या लेना गुरुवाई से? अगर मैं ग़लत हूँ तो मैं दोषी नहीं, क्योंकि मेरी नीयत साफ है और जीवन में मैंने अपने

निजी-स्वार्थ के लिए किसी को धोखा नहीं दिया। मेरे पास दुखी लोग आते हैं। मैं उनको शुभ भावना देता हूँ और प्रसाद देता हूँ। लेकिन एक भृगुसंहिता वाले पण्डित ने मुझे कहा था कि आप प्रसाद देना और आशीर्वाद देना बन्द कर दीजिए वरना आप को दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। सच है या झूठ है, इस का मुझे पता नहीं। मगर मैं यह सोचता हूँ कि आशीर्वाद देने से और प्रसाद देने से अगर किसी का भला होता है तो मेरा इस में क्या हर्ज़ है? मैं तो कुछ करता नहीं, दूसरे का विश्वास काम करता है।

आप लोगों ने इन महात्माओं के वचन सुने। मैं नहीं कहता कि आप मेरी बात को मानो क्योंकि मैं किसी का ठेकेदार नहीं हूँ। मैं तो अपना कर्त्तव्य, जो हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे ज़िम्मे लगाया हुआ है, उसको पूरा कर जाना चाहता हूँ। **और मैं आवाज़ देता हूँ कि एक जगह विश्वास रखो, वो शक्ति हर जगह मौज़ूद है और अपने अन्तर सच्चे बनकर प्रार्थना करो, वो ज़रूर सुनता है। यह ज़रूरी नहीं कि तुम किसी गुरु के ही पास जाओ और उस पर विश्वास करो। तुम अपने अन्तर अपनी आत्मा पर विश्वास करो।** आनन्द राव! मैं तुम को शपथ देता हूँ कि अगर मैं ग़लती पर हूँ, मेरा खण्डन करो। मुझे यह कोई दावा नहीं है कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठीक है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी यह काम करने की। इसलिए घसीटा जा रहा हूँ। मगर इतना अवश्य कहूँगा कि जो कुछ नाम कहता हूँ इस के बिना धार्मिक एकता नहीं हो सकती। आज कल गुरुओं के आपस में झगड़े हो रहे हैं और मुकद्दमे बाज़ियां हो रही हैं।

यह कहाँ का गुरुवाद हैं ? इन्होंने गुरुमत को समझा नहीं।

गुरु मध्य आदि अनन्त अद्‌भुत अमल, अगम, अगोचरम्।
विभू विरज पार अपार निर्गुण सगुण सत्य विश्वेश्वरम्॥
जेहि मति लखे नहिं गति लखे, यह शुद्ध तत्त्व विचार है।
जो चरण कमल की ओट आया, भव से बेड़ा पार है॥

गुरु शब्द-स्वरूप है और उसके चरण प्रकाश हैं। सनातन धर्म इसको शब्दब्रह्म और परब्रह्म कहता है। मैं कुछ नहीं करता, तुम्हारा विश्वास करता है। चार दिन के जीवन के लिए मैं क्यों हेराफेरी करूँ ? मेरा कर्म मेरे साथ जायेगा। मेरी नीयत साफ है। दोष नीयत पर होता है। मेरा वह भी कभी समय था जब मैं प्रेम और विरह में शब्द गाया करता था और रोया करता था। लेकिन जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है, लेकिन मैं नहीं होता; तो मुझे मन के रूप की समझ आ गई और मैं मन को छोड़कर ऊपर चला गया और मेरा दो-पना अर्थात् द्वन्द समाप्त हो गया। ऐसा होना ही था। ये दर्जे हैं। अब मेरा वह समय बीत गया। मुझ पर गुरु की दया क्या हुई ? सुनो ! मैंने हजूर दाता दयाल जी महाराज से बहुत प्रेम किया। मैंने तम्बूरा बजाया। उनके दरबार में गाया और नाचा। उन्होंने मुझे गुरु-पदवी दी और फरमाया कि तुमको सच्चे सतगुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और अब मुझे आप लोगों के दर्शन हो गये। मंज़िल का पता मुझे आप लोगों से केवल इस एक बात से लगा कि आपने बताया कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रकट हो कर आपके काम कर जाता है। **क्योंकि मैं नहीं होता, इसलिए मैं मन के**

रूप को समझ गया। अब मन से परे उस मालिक की तलाश में जाता हूँ। वहाँ उस चीज़ को तलाश करता हूँ जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है। उसका अन्त नहीं मिलता। घर का मुझे पता लग गया। हमारा घर वह है जहाँ न रूप है, न रंग है, न प्रकाश है और न शब्द है। वहाँ अभी तक मुझसे ठहरा नहीं जाता। तुम्हारी बदौलत मुझे यह समझ आई। यह है मुझ पर गुरु की दया! बाकी मेरा अपना ही जज़्बा था। उसका मैंने आनन्द लिया।

सब को राधास्वामी!

सूचना

सभी दानी सज्जनों, सत्संगियों से अनुरोध है कि जो धनराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम Punjab National Bank, Hoshiarpur के दो Account Numbers दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी Faqir Library Charitable Trust A/c No. 0206000100057805, IFSC Code-PUNB0020600 और Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code-PUNB0020600 में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवा सूचित कर दें, ताकि दानी सज्जनों की सूची में उनका नाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव,
फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।

आभार प्रकट

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि दी है। परमपूज्य परमदयाल जी महाराज की परमकृपा इन सज्जनों व इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है। -सचिव

S.No.	DONOR	Amount
1.	Mrs. & Mr. Sudhir Bhatnagar, USA	450000/-
2.	Padam Singh Tattar, Canada	106557/-
3.	Mohan Singh/Majeet Singh, USA	60000/-
4.	Smt. Lalita Mudgal	33000/-
5.	Mohan Lal Bagga, Hoshiarpur	24650/-
6.	Harish K. Shah, Mumbai	20000/-
7.	Vasha H. Shah, Mumbai	20000/-
8.	Mr. Amit & Mrs. Komal Argirsh, USA	21472/-
9.	Parkash Bhardwaj, USA	17776/-
10.	Mrs. G.Soni/Mr. R. Hiranandani, Mumbai	15000/-
11.	Tejashri S. Shah, Mumbai	15000/-
12.	Baldev Singh Bajwa, Canada	10657/-
13.	Sukhdev Singh Bajwa, Canada	10657/-
14.	Yashi, Nelima, Surya, Canada	10657/-
15.	In Memory of Late Sh. KMC Pardesi Ji, Canada	10657/-
16.	Balraj, Hoshiarpur	10000/-
17.	G.S. Raghav, Hoshiarpur	10000/-
18.	Ashish S. Gulwade, Mumbai	10000/-
19.	Prashant G. Gulwade, Mumbai	10000/-
20.	Shobha Jaswante, Amravati	10000/-
21.	Prakash Punjabi, Mumbai	10000/-
22.	Bipin Jaswante, Amravati	10000/-
23.	Sh. Gulwade Ji, Mumbai	10000/-
24.	Prabhakar B. Sawant, Mumbai	10000/-
25.	Shreya Salva, Mumbai	10000/-
26.	Pradip Salva, Mumbai	10000/-
27.	Vijaya Salva, Mumbai	10000/-
28.	Nitin Jaswante, Amravati	10000/-
29.	Anju Sharma, Mumbai	10000/-
30.	Diya Modi, Mumbai	10000/-
31.	Jintendra ModiMumbai	10000/-
32.	Neha Prakash Punjabi, Mumbai	10000/-
33.	Murari Modi, Mumbai	10000/-
34.	Mahesh Himmatramaka, Mumbai	10000/-
35.	Santosh Dalmia, Mumbai	10000/-
36.	Harminder Dua, Mumbai	10000/-
37.	Bhupendra Kothari, Mumbai	10000/-
38.	Mala Ankit Kothari, Mumbai	10000/-
39.	Sanjiv Ved Parkash Dua, Mumbai	10002/-
40.	Rajpreet Singh, Canada	7992/-
41.	Avtar Singh, USA	7181/-
42.	Amit Wadhera, USA	7181/-
43.	I.J. Arora, New Delhi	7000/-
44.	Ach. Kuldeep Sharma Ji, Batala	5500/-
45.	Parvesh Sharma & Family, Canada	5381/-
46.	Amrit Singh Gandham, Canada	5327/-
47.	Jagdev Bhullar, Canada	5327/-
48.	Amrit Kaur Bajwa, Canada	5327/-
49.	Devinder Bajwa, Canada	5327/-
50.	Rajpreet Bajwa, Canada	5327/-
51.	Sardara Singh Dhami, Canada	5327/-
52.	Gurdev Singh, Canada	5327/-
53.	Dr. P.L. Sharma, Shimla,	5000/-
54.	Seema Dogra D/o Abhay Dogra, Hsp	4444/-
55.	Suman, Canada	3729/-
56.	Om Talwar, USA	3626/-

57.	Lajpat Rai, Hoshiarpur	4000/-
58.	Randeep, Canada	2397/-
59.	Kulvinder Gill, Canada	2664/-
60.	Ravi Kant Sharma, Lalru	4000/-
61.	Mrs. & Mr. R.K. Bhardwaj, Ludhiana	2100/-
62.	Rakesh Sharma, Lucknow	2100/-
63.	A.N. Roy, Mumbai	2100/-
64.	Dr. Gurmail Singh/Sarabjit Kaur, Tanda	2100/-
65.	G.S. Bhatnagar, Patiala	2100/-
66.	Tripta Devi, Dulehar	2000/-
67.	Lalita Sharma, Gurgaon	2000/-
68.	Love Chopra, Hoshiarpur	1600/-
69.	Raksha Devi, Gagret	1100/-
70.	Vikram Karam Chand Bhanot, Ropar	1100/-
71.	Jaya Ahuja, Delhi	1100/-
72.	Rishika Dua, Mumbai	1100/-
73.	Siddhika Dua, Mumbai	1100/-
74.	Raju Dua, Mumbai	1100/-
75.	Vijay Dua, Mumbai	1100/-
76.	Kulwinder Samra, Canada	1065/-
77.	Labh Singh/Surinder Kaur, Ludhiana	1000/-
78.	B.S. Sharma (Retd. H/M) Sihor Pain (HP)	1000/-
79.	Bimla Ladhar, Jalandhar	1000/-
80.	Ganesh C. Kaushal, Adampur Doaba	600/-
81.	Krishan Gopal, Jalandhar	501/-
82.	Ajay Kumar, Hoshiarpur	500/-
83.	Champa Devi	500/-
84.	Sukaram Chand Sharma, Jwalamukhi	500/-
85.	S.K. Sethi, Jalandhar	500/-
86.	Ved Pal Singh, Fazalpur (UP)	500/-
87.	Rajinder Tiwari, Gagret	500/-
88.	Jagdeep Singh, Passi Kandi	500/-
89.	Virender, Akhtiarpur	500/-

डा. मोहन लाल विश्वकर्मा, अध्यक्ष, राधास्वामी जनरल ट्रस्ट, गोपी गंज (भदोई) से प्राप्त हुए पत्र दिनांक 2.8.19 की प्रतिलिपि सत्संगी भाई-बहनों की सूचना हेतु प्रस्तुत की जा रही है-

परम पूज्यनीय

परम संत हूजूर श्री दयाल कमल जी महराज

(फकीरमय)

" विनम्र निवेदन है कि **महर्षि शिवब्रतलाल जी वर्मन** कैं शिव समाधि तपस्थली पर वार्षिक महापर्व **महाशिवरात्रि** का परम पावन पर्व पर दिनांक **21 फरवरी 2020 दिन शुक्रवार** को दाता दयाल ट्रस्ट कमेटी द्वारा आपको इस महापर्व पर समस्त आचार्यगण सहित सादर आमंत्रित किया जाता है।

अतः हूजूर दयाल कमल जी महराज से समूचा शिव समाधि महर्षि जी की राधास्वामी संगत करवद्ध प्रार्थना करता है कि दाता दयाल के महापर्व पर पधार कर अमृतमयी सत्संत एवं दर्शन देने की महति दया करें। जिसके लिए शिव समाधि राधास्वामी संगत सदैव आभारी रहेगा।

तेरा दर्शन पाने को जी चाहता है, खुदी को मिटाने को जी चाहता है।
पिला दे ओ साकी राधास्वामी नाम की, मस्ती तेरा पाने को जी चाहता है।।

जब अपने ही दिल में खुदाई है तो काबे में सजदा कौन करेगा।
तेरा सत्संग दर्शन पाने को जी चाहता है।। ,,

राणा रणवीर सिंह,
सचिव